हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

जून, 2011 वर्ष 10 अंक 04

सम्पादक

डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

सहायक

मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय

मासिक सच्चा राही

मजलिसे सहाफ़त व नशरियात

पो0 बॉ0 नं0 93

टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ

फोन : 0522–2740406

: 0522–2741221

E-mail :

nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 12/-
वार्षिक	₹ 120/-
विशेष वार्षिक	₹ 500/-
विदेशों में (वार्षिक)	30 यू.एस डालर

चेक / ड्राफ्ट पर यह लिखें

"सच्चा राही"

पता

सेक्रेटरी, मजलिसे सहाफ़त व नशरियात

नदवतुल उलमा, लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

सत्य है

क़ब्र का जीवन है लम्बा सत्य है
क़ब्र में दुख होगा या सुख सत्य है
फिर क़ियामत उसके पीछे सत्य है
लेखा जोखा हश्र का भी सत्य है
है जहन्नम आग का घर सत्य है
नेमतों का घर है जन्नत सत्य है
मान लो कहना रसूले पाक का
फिर सफलता पूरी पूरी सत्य है
रहमतें तेरी नबी पर हों ख़ुदा
मैं हूँ उनका उम्मती यह सत्य है

इदारा

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

Desining & Editing by : Qamaruzzama- +91 94522 95052, +91 91258 94345

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी	3
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	4
अपने भाई से अच्छा गुमान रखो	डॉ हारून रशीद सिद्दीक़ी	6
जगनायक	हज़रत मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी	8
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी	14
भली बातें	नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	19
अच्छे लोगों की संगत और उसका प्रभाव	मौ0 सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी	20
पुरानी यादें और नई समस्याएं	ए0 जे0 खान	23
आम	इदारा	25
आदर्श शासक	नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	26
मुसीबत में बशर के जौहरे मरदाना खुलते हैं	मौ0 सै0 वाज़ेह रशीद हसनी नदवी	27
होनहार बिरवन के चिकने–चिकने पात	डॉ0 हैदर अली खाँ	29
इन्सान और अल्लाह की पहचान	बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी	30
इस्लामी मीडिया की आवश्यकता	मौ0 सै0 वाज़ेह रशीद हसनी नदवी	32
शिक्षा प्रद घटना	इदारा	34
अहले ख़ैर हज़रात से अपील		37
ध्यान दीजिए	इदारा	38
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ नदवी	40

क़ुर्आन की शिक्षा

–मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी

सूर–ए–बक़रह

अनुवाद : और जब कहा तुमने कि ऐ मूसा, हम हर्गिज़ सब्र न करेंगे, एक ही तरह के खाने पर, इसलिए तू दुआ मांग हमारे लिए अपने परवरदिगार से कि वह ज़मीन से उगा दे हमारे लिए तरकारी, और ककड़ी और गेहूँ और मसूर और प्याज[1], कहा मूसा ने कि क्या लेना चाहते हो वह चीज़, जो तुच्छ है उसके बदले में जो बेहतर है[2], उतरो किसी शहर में तो तुम को मिले वह जो मांगते हो[3], और डाली गई उन पर ज़िल्लत और मोहताजी और फिरे अल्लाह का गुस्सा लेकर[4], ये इसलिये हुआ कि नहीं मानते थे वह अल्लाह के हुक्मों को और पैगम्बरों की अकारण हत्या करते थे, ये इसलिये कि नाफरमान थे और हद पर न रहते थे[5(61)]। बेशक जो मुसलमान हुए, और जो लोग यहूदी हुए और नसारा और साबिईन जो ईमान लाया (उनमें से) अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर, और काम किये नेक, तो उनके लिये है उनका सवाब उनके रब के पास और नहीं है उन पर कुछ खौफ और न वह गमगीन होंगे[6(62)]।

तफ़्सीर (व्याख्या)

1. ये किस्सा भी उसी जंगल का है। बनी इसराईल आसमानी खाना खाते–खाते उकता गए तो कहने लगे कि हमसे एक तरह के खाने पर सब्र नहीं हो सकता, हमको तो ज़मीन का अनाज, तरकारी, साग, सब्ज़ी चाहिये।

2. अर्थात जो हर तरह से बेहतर है, लहसुन, प्याज़ वगैरह से बदलते हो।

3. अगर यही जी चाहता है तो किसी शहर में जाओ, जहाँ तुम्हारी चाहत की तमाम चीजें मिलेंगी। अतः फिर ऐसा ही हुआ।

4. जिल्लत ये कि वह हमेशा मुसलमान और ईसाईयों के सत्ता के अधीन रहते थे। कई लोगों के यहाँ धन–दौलत होने के बावजूद भी वह सत्ता से पूरी तरह वंचित हो गए। हालांकि शासन करना सम्मान की बात है। और यहूद के मोहताजी के बारे में कहा जा रहा है कि आमतौर पर यहूदी के पास रूपये–पैसे की किल्लत है और जिनके पास धन–दौलत है तो वह प्रशासन के भय से अपने को निर्धन जाहिर करते हैं। लालच और कंजूसी के कारण वह मोहताजों से बदतर नज़र आते हैं, इसलिए मालदार होकर भी मोहताज ही रहे और मान–सम्मान जो अल्लाह ने दिया था उससे रुजू (प्रत्यागमन) करके उसके गुस्से और कहर के घेरे में आ गए।

5. अर्थात् उस अपमान, दरिद्रता और ईश्वरीय क्रोध (अजाबे इलाही) का कारण उनका इन्कार (कुफ्र) और नबियो का क़त्ल करना और उस कुफ्र व क़त्ल का कारण आदेशों की अवहेलना और इस्लामी शरीअत की सीमा को पार कर जाना था।

6. अर्थात किसी विशेष सम्प्रदाय (फिरक़ा) पर आधारित नही, बल्कि यक़ीन लाना और नेक अमल करना शर्त है। अतः जिसको ये नसीब हुआ, सवाब पाया। ये इसलिये कहा कि बनी इसराईल इस बात पर अभिमान करते थे कि हम पैगम्बरों की औलाद हैं, हम हर तरह से अल्लाह के नज़दीक बेहतर हैं।

शेष पृष्ठ ....13 पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अनु0 नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

—अमतुल्लाह तस्नीम

हज़रत अबू उमामा रज़ि0 से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने फरमाया कि मरीज की मिज़ाज़ पुर्सी करो, भूखे को खाना खिलाओ और कैदी को रिहा करो। (बुखारी)

मिजाज पुर्सी की फज़ीलत

हज़रत सोबान रज़ि0 से रिवायत है कि हजरत मुहम्मद सल्ल0 ने फरमाया कि मुसलमान जब अपने मुसलमान भाई की अयादत करता हे तो वापस होने तक बराबर जन्नत की खोशाचीनी में रहता है। लोगों ने पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल! जन्नत की खोशाचीनी का क्या मतलब? फरमाया उसके मेवे को चुनचुन कर खाना। (मुस्लिम)

हज़रत अली रज़ि0 से रिवायत है कि मैंने हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को फरमाते हुए सुना है कि कोई मुसलमान किसी मुसलमान की अयादत सुबह—सुबह करता है तो सत्तर हज़ार फरिश्ते शाम तक उसपर रहमत भेजते हैं और अगर शाम को अयादत के लिए जाता है तो सुबह तक सत्तर हज़ार फरिश्ते उसके लिए दुआ करते हैं और उसको जन्नत में खाने को मेवा मिलेगा। (तिर्मिजी)

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि एक यहूदी का लड़का आप सल्ल0 की सेवा करता था। जब वह बीमार हुआ तो आप सल्ल0 उसका कुशलक्षेम पूछने के लिए गए और उसके सरहाने बैठ गए और उससे कहा कि मुसलमान हो जा। उसका बाप उसके पास बैठा हुआ था, उसने बाप की तरफ देखा। बाप ने कहा अबुल कासिम[1] की बात मान ले। तो वह इस्लाम ले आया। आप सल्ल0 ये कहते हुए वहां से निकले कि अल्लाह का शुक्र है है जिसने उसको आग से बचा लिया।

ज़ख्म पर आपका अमल

हज़रत आइशा रज़ि0 से रिवायत है कि जब आप सल्ल0 से कोई आदमी जख्म या घाव की शिकायत करता तो आप सल्ल0 उँगली से उसकी ओर इशारा करके कहते (जिसको सुफियान रह0 रावी ने अपनी कल्मा वाली उँगली ज़मीन पर रख कर उठाई और इस तरह कहा) अनुवाद ''हमारी ज़मीन की मिट्टी, मुसलमान का लुआब (लार), अल्लाह के आदेश से हमारे बीमार की बीमारी ठीक हो जाएगी''।

---

1. ये आप सल्ल0 की कुन्नियत थी।

मरीज़ के लिए दुआ

हज़रत आइशा रज़ि0 से रिवायत है कि आप सल्ल0 जब अपने किसी घरवालों की मिज़ाज़ पुर्सी करते तो अपना दाहिना हाथ फेरते और कहते, अनुवाद ''ऐ अल्लाह, ऐ लोगों के रब! डर दूर कर और शिफा दे, तू ही शिफा देने वाला है, नही है शिफा मगर जो तू शिफा दे। ऐसी शिफा कि मर्ज़ को न छोड़े। (बुखारी)

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि उन्होंने साबित रज़ि0 से कहा कि मैं तुम पर हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की फूँक छोड दूँ। उन्होंने कहा हाँ! फिर उन्होंने ये दुआ पढ़ी, अनुवाद ''ऐ अल्लाह, ऐ लोगों के रब! शिफा दे तू ही शिफा देने वाला है, तू ही तन्दरुस्ती देता है, तेरे अलावा कोई तन्दरुस्त नहीं करता, ऐसी तन्दरुस्ती दे कि बीमारी बाक़ी न रहे। (बुखारी)

हज़रत साद रज़ि0 से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 मेरी अयादत को आए और कहा, अनुवाद ''ऐ अल्लाह! साद को शिफा दे।

(मुस्लिम)

हज़र अबू अब्दुल्लाह बिन

अबुलआस रज़ि0 से रिवायत है कि उन्होंने हज़रत मुहम्मद सल्ल0 से दर्द की शिकायत की, जो उनके जिस्म में था। आप सल्ल0 ने कहा कि अपना हाथ दर्द की जगह रखो और तीन बार बिस्मिल्लाह और सात बार अअूज़ु बिअिज़्ज़तिल्लाही व कुद्रतिहि मिन शर्रे माअजिदु वऊहाज़िरू" पढो। अनुवाद "अल्लाह के नाम के साथ अल्लाह की इज्ज़त व कुदरत के साथ पनाह माँगता हूँ उसकी बुराई से, (अर्थात जो दर्द मैं अपने बदन में पाता हूँ उससे बचना चाहता हूँ)।

(मुस्लिम)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि आप सल्ल0 ने फरमाया कि जो आदमी किसी ऐसे मरीज़ की मिजाज़ पुर्सी करे जिसको अभी मौत न आई हो और उसके पास सात बार कहे "अस्अलुल्लाहल्अज़ीम रब्बल्अर्शिल अज़ीमि अंय्यश्फीक" अनुवादः मैं अल्लाह से जो बड़े अर्श का मालिक है, सवाल करता हूँ कि तुमको शिफा दे।

तो अल्लाह उसको मर्ज से बचाएगा। (अबूदाऊद–तिर्मिज़ी)

मरीज से क्या कहा जाए

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि आप सल्ल0 एक देहाती की अयादत के लिए गए और आप सल्ल0 जब किसी की अयादत के लिए जाते तो कहते, कोई डर नहीं, मगर अल्लाह ने चाहा तो ये पाक करने वाली है[1] (अर्थात गुनाहों से पाक करने वाली है)।

(बुखारी)

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि0 से रिवायत है कि जिब्रील अ0 हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के पास आये और कहा कि ऐ मुहम्मद! क्या आप बीमार हैं, आपने कहा हाँ, जिब्रील अ0 ने कहा, अनुवादः अल्लाह के नाम से फूँकता हूँ हर उस चीज़ से जो आपको तकलीफ दे और हर किसी की बुराई और हसद करने वाली आँख से, अल्लाह आपको तन्दरुस्त फरमाए। अल्लाह के नाम के साथ मैं आप पर फूँकता हूँ। (मुस्लिम)

जहन्नम से हिफाज़त करने वाले कलिमात– हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि0 से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने फरमाया कि जो आदमी लाइलाह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर कहे, (अर्थात अल्लाह के अलावा कोई पूज्नीय नही और अल्लाह ही बड़ा है) तो अल्लाह उसकी तस्दीक करता है और कहता है कि "लाइलाह इल्ला अना वअना अक्बर (यानि कोई माबूद नहीं मगर मैं और मैं बहुत बड़ा हूँ। और बन्दा "लाइलाह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीकलहु" कहता है (यानि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नही, वह अकेला है, उसका कोई साझी नही) तो परवरदिगार कहता है कि "लाइलाह इल्ला अना वह्दी लाशरीक ली। (यानि मेरे सिवा कोई माबूद नही, मैं अकेला हूँ, मेरा कोई साझी नहीं) और बन्दा जब कहता है "लाइलाह इल्लल्लाहु लहुलमुल्कु वलहुलहम्दु" (यानि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नही, उसके लिए बादशाहत है और उसी की सब तारीफ है) तो परवरदिगार कहता है "लाइलाह इल्ला अना लियल् मुल्कु वलियल्हम्दु" (यानि नहीं है कोई माबूद मगर मैं, और मेरी ही बादशाहत है और मेरे लिये ही सब तारीफ है) और जब बन्दा कहता है "लाइलाह इल्लल्लाहु वला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाहि (यानि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और न कुव्वत है और न ताक़त है मगर अल्लाह को) तो अल्लाह जवाब में कहता है "लाइलाह इल्ला अना वला हौल वला कुव्वत इल्ला बी (यानि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं और मेरे सिवा किसी में कुव्वत और ताक़त नही)। फिर आप सल्ल0 ने कहा कि जो इन कल्मों को मौत की बीमारी में कहे तो उसको आग न जलाएगी। (तिर्मिज़ी) ❑❑

---

1. अर्थात तकलीफ गुनाहों से पाक करने वाली है जैसा अगली हदीसों से साबित है।

अपने भाई से अच्छा गुमान रखो

–डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

क़ुर्आन कहता है: "ईमान वाले तो आपस में भाई–भाई हैं, पस अपने भाईयों में मेल करा दिया करो" यानी जो अल्लाह पर ईमान ले आए जैसा की वह अपने नामों और सिफतों (गुणों) के साथ है और यह मान लिया कि अल्लाह ने अपने बन्दों की हिदायत के लिये, अपना पसन्दीदा रास्ता बताने के लिय बहुत से नबी और रसूल भेजे और सब से आखिर में अपने आखिरी और प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को भेजा। अब आप पर ईमान लाने वाले ही को नजात मिल सकेगी और जिसने हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को अल्लाह का आखिरी नबी मान लिया और यह मान लिया कि अल्लाह ने अपने बन्दों को अपना पसन्दीदा रास्ता बताने के लिये अपने रसूलों पर किताबें और सहीफे उतारे, उनमें तौरेत हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर, जुबूर हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम पर, इंजील हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर और क़ुर्आन मजीद अपने आखिरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल0 पर उतारा। कुछ नबियों पर सहीफे भी उतारे लेकिन क़ुर्आन मजीद के अलावा तमाम किताबें और सहीफे या तो गायब हो गये या लोगों ने उनमें घटा बढ़ा कर बदल डाला और वह मन्सूख कर दिये गये लेकिन क़ुर्आन मजीद अपनी असली हालत में मौजूद है उसके अल्फाज़, उसके अर्थ, उसके अहकाम सबकी हिफ़ाजत का ज़िम्मा खुद अल्लाह तआला ने ले रखा है और उसके असबाब पैदा कर दिये हैं। उम्मत में बेशुमार लोग क़ुर्आन मजीद को अपने सीनों में रखे हुए हैं, क़ारी हज़रात उसके अल्फाज को पुरकशिश आवाज़ में बराबर फैला रहे हैं, मुफस्सिरीन हज़रात ने उसके माना को तफ्सीरों में महफूज कर दिया है। और उसके अहकाम को लिख दिया है। दीनी मदारिस में उसकी तालीम का बहुत अच्छा इन्तिज़ाम है। मतलब यह कि ईमान वाला मानता है कि क़ुर्आन मजीद अल्लाह की आखिरी किताब है, जो हज़रत मुहम्मद सल्ल0 पर नाज़िल हुई वह हर तरह से महफूज़ है।

यह भी मानता है कि अल्लाह की एक खास मखलूक़ है जिन को मलाइक़ा या फरिश्ते कहा जाता है। वह न खाते हैं न पीते हैं, बस अल्लाह के हुक्म पर चलते हैं और अल्लाह की तस्बीह करते रहते हैं उनमें चार फरिश्ते तमाम फरिश्तों में ऊँचा दरजा रखते हैं। हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम इन का अहम काम अल्लाह का कलाम रसूलों और नबियों तक पहुँचाना है इन्हीं के ज़रिये क़ुर्आने मजीद हमारे नबी सल्ल0 पर उतरा। हज़रत इज़राईल अलैहिस्सलाम का काम अल्लाह के हुक्म पर बन्दों की रूह निकालना है, हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम का काम अल्लाह के हुक्म से पानी बरसाना और बन्दों को उनकी रोज़ी पहुँचाना है, हज़रत इस्राफील अलैहिस्सलाम जब अल्लाह का हुक्म होगा सूर फूँकेगे और कियामत आएगी सब कुछ खत्म हो जाएगा। फिर अल्लाह के हुक्म से दोबारा सूर फूँकेंगे तो हश्र काईम होगा फरिश्तों की तादाद बहुत जियादा है, कोई उनको गिन नही सकता उनकी गिनती अल्लाह ही को मालूम है। कोई फरिश्ता अल्लाह के हुक्म

के बिना कुछ नहीं कर सकता। ईमान वाला यह भी मानता है कि कियामत आएगी। पहले सूर पर सब कुछ मिट जाएगा, दूसरे सूर पर सब ज़िन्दा होकर एक मैदान में जमा होंगे, वह बड़ा सख़्त दिन होगा, इसी को हश्र कहते हैं, फिर सबके आमाल का हिसाब होगा और आमाल के मुताबिक जहन्नम या जन्नत का फैसला होगा, जिनके अमल भी ईमान के मुताबिक होंगे वह हमेशा के लिये जन्नत में जाएंगे, ईमान न लाने वाले हमेशा के लिये जहन्नम में जाएंगे, ईमान वाले जिन्होंने बड़े बड़े गुनाह किये होंगे और उनसे तौबा न की होगी वह भी अपने गुनाहों के मुताबिक जहन्नम की सज़ा भुगतेंगे, कुछ लोग अल्लाह के नबियों और नेक लोगों की सिफारिश से भी(गुनहगार ईमान वाले) जहन्नम से निकाले जाएंगे, ईमान वाला तक़दीर पर भी ईमान रखता है कि जो कुछ बन्दों के लिए अच्छा या बुरा उसकी जिन्दगी में आने वाला है वह अल्लाह के इल्म में है और वह सब अल्लाह ने पहले ही से लिख रखा है।

इन सारी बातों को मानने वाला ईमान वाला कहलाता है यह सारी बातें हमको नबी सल्ल0 के ज़रिये मालूम हुई इसमें से कुछ कुर्आन में है और कुछ हदीस में है, इनको हम यूं भी कह सकते हैं कि ईमान वाला वह है जो नबी सल्ल0 की बताई सारी बातों को मानता है पस जो इस तरह ईमान लाएं, नमाज़ और दूसरे फ़राइज़ अदा करें तो वह आपस में भाई–भाई हैं अतः वह अपने भाई से अच्छा गुमान रखे, अगर उनमें शैतान फूट डाल दे तो दूसरे भाईयों का फर्ज है कि उनमें मेल करा दिया करें। लेकिन अफसोस आज बहुत से लोगों को शैतान ने ऐसा बहकाया है कि वह ईमान वालों में फूट डाल रहे हैं। एक दूसरे पर झूटी बातें लगाकर उनको अपना भाई समझने के बजाए ग़ैर समझ रहे हैं।

आज उम्मत का जो हाल है सब जानते हैं कितने भाई अपने को मुसलमान कहते हैं लेकिन इस्लाम के कल्मे तक से नावाकिफ हैं न उसके माना जानते हैं न उसके तकाजों से वाकिफ हैं। मन मानी ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं, न नमाज़ से मतलब न रोज़े से न जकात देते हैं न हज करते हैं जबकि उनके पास माल है। शादी विवाह में निकाह तो पढ़वाते हैं लेकिन इस सिलसिले में हुजूर सल्ल0 की क्या सुन्नत है, सहाबा रज़ि0 का क्या अमल था उससे उनको कोई सरोकार नहीं, अमीर हो या ग़रीब सब मन माना काम करते हैं और बहुत सी बातें शरीअत के खिलाफ अपनाते हैं। इसी तरह किसी की वफात पर शरीअत के अहकाम को ताक़ पर रख कर मन मानी करते हैं। ऐसे में कुछ खुदा के दीनदार बन्दे उनकी खैर ख्वाही में उनको दीनी अहकाम से आगाह करके उनको दीन की तरफ बुलाते हैं तो कुछ लोगों को शैतान बहकाता है और वह उन पर झूठे इलजामात थोप कर लोगों को उनसे दूर करने की कोशिश करते हैं इसमें से कुछ पढ़े लिखे भाई भी दीन से ना वाक्फियत के सबब उनके चक्कर में आ जाते हैं और दीनदार दीन का काम करने वालों को बुरा समझने लगते हैं। इस तरह वह दीनदारों को बुरा कह कर अपनी आकिबत खराब कर लेते हैं।

यह बरेलवी, देवबन्दी का झगड़ा इसी तरह का है। आपके सामने जब इस तरह का मसअला आए तो आप किसी की लिखी इबारत में उलझने के बजाए अपने भाई से पूछें कि क्या आप अल्लाह और रसूल पर उस तरह ईमान नहीं रखते जिस तरह हुजूर सल्ल0

शेष पृष्ठ ....24 पर

जगनायक

–हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

–अनु0 मुहम्मद गुफरान नदवी

इस्लाम लाने वालों पर कुरैश के अत्याचार–

इस तरह कुरैश के यह दो मौक़िफ़ (दृष्टिकोण) हो गए थे कि एक वह लोग जो आहिस्ता आहिस्ता इस्लाम कुबूल करते जाते थे, दूसरी तरफ़ वह लोग जो अपनी बड़ाईयों और ख़ानदानी उत्तमता के एहसास से काम लेते थे और इस्लाम का इन्कार करते थे और मुसलमान होने वालों पर गुस्सा करते और उनपर हर तरह का दबाव डालते, तकलीफ़ पहुंचाते कि वह ख़ानदान के राएज तरीक़े की तरफ लौट आएं। और मक्का में जो कुरैशी न थे बल्कि बाहर के होने की वजह से कमज़ोर हैसियत के थे, उनको तो सख़्त जुल्म का निशाना बनाया जाता था यहां तक कि बाज़ बाज़ की उस जुल्म की वजह से मौत भी हो गई[1]।

हज़रज बिलाल रज़ि0 हब्शी थे, उमय्या बिन ख़लफ़ के गुलाम थे, जब उमय्या ने सुना कि बिलाल मुसलमान हो गए हैं तो भांति भांति के अज़ाब उनके लिये ईजाद किये गए, गर्दन में रस्सी डालकर लड़कों के हाथ मे दी जाती और वह मक्के की पहाड़ियों में उन्हें लिये फिरते, रस्सी का निशान गर्दन में नुमायां हो जाता। मक्का की घाटी की तप्ती हुई रेत पर उनको लिटा दिया जाता और गरम गरम पत्थर उनकी छाती पर रख दिया जाता, रस्सी बाँध कर लकड़ियों से पीटा जाता, धूप में बिठाया जाता, भूका रखा जाता, हज़रत बिलाल रज़ि0 इन सब हालतों में "अहद" अहद" के नारे लगाते रहते कि ख़ुदा एक, ख़ुदा एक[1]।

इस हालत में एक मर्तबा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 उनके पास से गुज़रे और उमय्या को हज़रत बिलाल के बदले में एक उनसे ज़ियादा मज़बूत व तवाना काला कलूटा गुलाम देकर हज़रत बिलाल को आज़ादा करा दिया[2]।

अम्मार और उनके वालिद यासिर, उनकी वालिदा सुमय्या मुसलमान हो गई थीं, बनी मख़ज़म उनको बाहर लाते और उनको मक्के की सख़्त गर्मी और तपिश में तरह–तरह की तकलीफें पहुंचाते। रसूलुल्लाह सल्ल0 का उधर से गुज़र होता तो आपको रंज व अफसोस होता, लेकिन आप उस वक्त और कुछ नहीं कर सकते थे, सिवाए उस तलकीन के कि "आले यासिर ज़रा सब्र रखो तुम्हारी मन्ज़िल जन्नत है" उन पर जुल्म इस क़दर बढ़ा कि कम बख़्त अबू जहल ने बीवी सुमय्या की शर्म गाह में नेज़ा मारा जिसके असर से वह शहीद हो गईं[1]।

अबू फ़कीहा जिनका नाम "अफ़लह" था, के पैरों में रस्सी बाँध कर उन्हें पथरीली ज़मीन पर घसीटा जाता[2]।

ख़ब्बाब बिन अरत के सर के बाल खींचे जाते, गर्दन मरोड़ी जाती, बारहा आग के अंगारों पर लिटाया गया[3]।

कुरैश का यह सुलूक गुलामों और कमज़ोरों के ही साथ न था, बल्कि अपने बेटों ओर अजीज़ों के

1. सीरत इब्ने हिशाम: 1/315

2. सीरत इब्ने हिशाम: 1/320

1. सीरत इब्ने हिशाम: 1/320, ज़ादुल मआद: 3/22।
2. अल कामिल फ़ित तारीख़: 2/69
3. तब्क़ात इब्ने सअद: 3/82, इसतिआब:1/288

साथ भी वह ऐसी ही संगदिली का बर्ताव किया करते।

हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि0 के इस्लाम लाने की ख़बर उनके चचा हकम को हुई तो वह हज़रत उस्मान को खजूर में बांध देता और नीचे से धुवां दिया करता।

हज़रत मुस्अब बिन उमैर रज़ि0 को उनकी माँ ने घर से निकाल दिया था, इस जुर्म में कि वह इस्लाम ले आए थे।

बाज़ सहाबा को कुरैश गाय, ऊँट के कच्चे चमड़े में लपेट कर धूप में फेंक देते थे, बाज़ को लोहे की ज़िरह (कवच) पहना कर जलते पत्थरों पर लिटा दिया करते।

दूसरी तरफ़ मुसलमान हो जाने वालों को उनके नबी का हुक्म था कि तकलीफ़ों पर सब्र करें, कोई जवाबी कारवाई न करें, क्योंकि अल्लाह तआला की तरफ़ से फरमा दिया गया था: (अपने हाथ रोके रखो और नमाज़ को क़ाएम करो)।

इस तरह नबी सल्ल0 के ज़रिये इस बात की तरफ़ तवज्जुह दिलाई गई कि चुंकि अस्ल मक़सद लोगों को समझाना और उनको दीने हक़ मानने वाला बनाना है।

अगर उनकी मुख़ालिफ़त का जवाब इन्तिक़ामी अन्दाज़ (बदले की भावना) में दिया जाएगा तो उनमें दीने हक़ (सत्य धर्म) से इन्कार में ज़ियादा सख़्ती बढ़ेगी, और ज़िद में इज़ाफ़ा होगा, फिर मुसलमानों को उस वक़्त तक ऐसी ताक़त भी हासिल नहीं थी कि कुफ़्फ़ार की ताक़त का अपनी ताक़त से मुक़ाबिला कर सकें, और वह उस जुल्म का जवाब ताक़त से देते तो उस वक़्त की कमज़ोर दअ्वत का काम जो कि जब्र से नहीं बल्कि समझा बुझा कर करना था पीछे रह जाता, एक दूसरे के दरमियान गुस्सा और दुश्मनी की ताक़त आज़माई होने लगती। लिहाज़ा अस्ल मक़सद को सामने रखते हुए सब्र व बर्दाश्त से काम करना था, उस वक़्त की कमज़ोर स्थिति में सब्र और इन्तिज़ार और परवरदिगार से नुसरत (मदद) की तलब व दुआ पर इक्तिफ़ा (सन्तोष) करना था।

बहर हाल इन्सानों की इस्लाह (सुधार) और उनके अक़ीदे व इबादत की दुरुस्तगी की कोशिश अस्ल काम था, लिहाज़ा जहां तक गुन्जाइश थी उसको इख़्तियार किया गया और यह रवैया इख़्तियार किया गया कि इस राह में चलने वालों को जो तकलीफ़ और दुश्वारी पेश आए और इस मुद्दत में जो आज़माईश सूरते हाल हो उसको बर्दाश्त करना है, हालात का तक़ाज़ा भी यही था और मुसलमान का मुआमला, यह है कि उसकी तकलीफ़ें उसकी दुनियावी ज़िन्दगी में कितनी भी ज़ियादा हों इस छोटी उम्र ही तक रहती हैं, उसकी मुख़्तसर और फ़ानी (थोड़ी और मिट जाने वाली) दुनियावी ज़िन्दगी के बाद हमेशा रहने वाली ज़िन्दगी शुरु होगी, जहां इन्सान के लिये चाहे वह किसी वर्ग या क़ौम से संबन्ध रखता हो उसके इख़्तियार किये हुए अक़ीदे व इबादत और उसके किरदार (आचरण) व अमल के मुताबिक़ अमल होगा, सही अक़ीदा और अच्छा अमल रहा होगा तो अच्छा मुआमला होगा, ग़लत अक़ीदा और बुरा अमल रहा होगा तो बुरा नतीजा भुगतना पड़ेगा और अगर सच्चाई के रास्ते में तकलीफ़ें आईं हों तो तकलीफ़ों का सिला जाएद और भरपूर मिलेगा, और आख़िरत की ज़िन्दगी चूंकि लंबी से लंबी तर होगी, लिहाज़ा यह सिला भी लंबा तर मिलेगा, और उसकी

दुनियावी तकलीफ़ों की तलाफ़ी (क्षतिपूर्ति) बढ़ चढ़ कर हो सकेगी।

चुनांचि हुज़ूर सल्ल0 की सरपरस्ती (संरक्षता) में दावत का काम अन्जाम देने और दीन पर अमल करने का हुक्म हुआ। ऐसे–ऐसे वक़िआत पेश आए जो एक तरफ़ बड़े दिल दहलाने वाले थे लेकिन ऐसे वाकिआत भी सामने आए जो ईमान वालों के दिल बढ़ाने वाले भी थे, बहर हाल उनके साथ अल्लाह की मदद थी, यह मदद ख़ास तौर पर क़ुर्आन मजीद की आयतों के ज़रिये तसकीन देने के ज़रिये थी, जो एक तरफ़ हुज़ूर सल्ल0 की नबूवत और दीने हक़ लाने वाले की तसदीक़ व तहसीन (प्रशंसा व पुष्टि) करती थीं और दूसरी तरफ़ मुसलमानों के अज़्म व यक़ीन (संकल्प व विश्वास) को बढ़ाने वाली थीं, और इस्लाम लाने वालों को जब इन तकलीफ़ों से परेशानी का एहसास बढ़ता तो आप सल्ल0 तसकीन देते और अच्छे नतीजे (परिणाम) की उम्मीद दिलाते।

तकलीफ़ पहुंचाने के लिए नियमानुसार कमेटियों की रचना–

क़ुरैशे मक्का रसूलुल्लाह सल्ल0 और मुसलमानों पर जो ज़ुल्म व अत्याचार कर रहे थे उनके असर से जब मुसलमानों में कोई तब्दीली होती नहीं देखी तो कुफ़्फ़ार ने अधिक तकलीफ़ देने के तरीक़े तै किये और उसके लिये बजाए अलग अलग तरीक़ों की कोशिशों के नियम पूर्वक कमेटियां बनाई गईं।

एक कमेटी बनाई गई जिसका इन्चार्ज अबूलहब था और मक्का के पच्चीस सरदार उसके मेम्बर थे, उस कमेटी में एक बड़ा सवाल यह था कि जो लोग दूर दराज़ से मक्के में आते हैं उनसे मुहम्मद सल्ल0 के तअल्ललुक से ऐसी बात कही जाए कि वह आपसे मिलने और आपकी बात सुनने से बचें ताकि वह लोग आप की बातों से प्रभावित न हों, न आपकी बात पर ध्यान दें। एक ने कहा कि हम नए आने वालों को बतालाया करें कि वह काहिन (ज्योतिष) है।

वलीद बिन मुग़ैरह (जो एक खुर्रान्ट बुड्‌ढा था) बोला मैंने बहुतेरे काहिन (ज्योतिष) देखे हैं, लेकिन कहां काहिनों की तुक बन्दियां और कहाँ मुहम्मद सल्ल0 का कलाम, हम को तो ऐसी बात न कहनी चाहिये, जिससे क़बाएल अरब यह समझें कि हम झूट कह रहे हैं।

एक ने कहा: हम उसे दीवाना बताया करेंगे।

वलीद बोला: मुहम्मद को दीवानगी से क्या निसबत (लगाव) है? एक बोला: अच्छा हम कहेंगे: वह शाएर (कवि) है। वलीद ने कहा: हम जानते हैं कि शेर (कविता) क्या होती है, उसके गुण और अवगुण से हम भली भांति परिचित हैं, मुहम्मद के कलाम को शेर (कविता) से ज़रा मुशाबिहत (समानता) नहीं।

एक बोला: हम बताएंगे कि वह जादूगर है। बलीद बोला: जिस तहारत व लताफ़त व नफ़ासत (पवित्रता, कोमलता, शुद्धता) से मुहम्मद रहता है वह जादूगरों में कहां होती है, जादूगरों की मनहूस सूरतें और नजिस आदतें अलग ही होती हैं।

अंत में इस कमेटी ने निम्नलिखित प्रस्ताव पेश किया और उससे सब लोग सहमत हुए, "मुहम्मद को हर तरह से दिक़ किया जाए, बात बात में उसकी हंसी उड़ाई जाए, अधिक से अधिक उन्हें तकलीफ़ दी जाए और मज़ाक़ उड़ाया जाए, मुहम्मद को सच्चा समझने वालों को इन्तिहा दर्जे की तकलीफ़ों का शिकार बनाया जाए[1]।

1. सीरत इब्ने हिशाम: 1/270

क़ुरैश के सरदारों की अबूतालिब से मुलाक़ात— अब क़ुरैश में हर तरफ़ हर वक़्त रसूलुल्लाह सल्ल० की चर्चा होने लगी, लोग एक दूसरे को आप सल्ल० की मुख़ालिफ़त और दुश्मनी पर आमादा करते और उसके लिए फ़िज़ा तय्यार करते, चुनांचि एक मर्तबा क़ुरैश के सरदारों का एक वफ़्द (प्रतिनिधि मण्डल) अबूतालिब के पास गया और उनसे कहा: "ऐ अबूतालिब आप बड़ी उम्र के हो गए हैं और हमारी निगाह में आपकी बड़ी क़द्र और इज़्ज़त है, हमने आपसे पहले भी ज़िक्र किया था कि आप अपने भतीजे को मना कर दें लेकिन आपने इस सिलसिले में कुछ भी न किया, अब ख़ुदा की क़सम हम इससे ज़ियादा सब्र न करेंगे, जितना हमने अब तक सब्र का सुबूत दिया है, अब हम अपने बाप दादा की बातों को ग़लत करार देना, और हमको नासमझ और बेअक़्ल ठहराना और हमारे मअ़बूदों में ऐब निकालना ज़ियादा बरदाश्त नहीं कर सकते, या आप उनको इस हरकत से बाज़ रखें या फिर हम उनसे और आपसे समझलेंगे, यहाँ तक हममें से कोई एक फ़रीक़ (पक्ष) ख़त्म हो जाए"।

अबूतालिब पर अपनी क़ौम की जुदाई और दुश्मनी की शाक़ (भारी) थी, लेकिन वह इस पर भी राज़ी न थे कि वह रसूलुल्लाह सल्ल० की मदद से हाथ उठा लें और उनको क़ौम के हवाले कर दें, उन्होंने आप को बुला भेजा और कहा: "मेरे भतीजे! तुम्हारी क़ौम के लोग मेरे पास आए थे और ऐसा ऐसा कह रहे थे, भतीजे! मेरी जान का भी ख़्याल करो, और अपनी जान का भी, मुझ पर इतना बोझ न डालो जिसको मैं न उठा सकूँ"।

रसूलुल्लाह सल्ल० को यह सुनकर ख़्याल हुआ कि शायद अबूतालिब अब उनके मुआ़मले में संकोच में पड़ गए हैं, और आपके बचाव और हिफ़ाज़त की फ़िक्र न कर सकेंगे, आपको रंज हुआ और आपने अपनी मजबूरी बताते हुए फ़रमाया: "चचा ख़ुदा की क़सम! (मुझ पर ऐसी ज़िम्मेदारी डाली गई है कि) अगर यह लोग मेरे दाहिने हाथ में सूरज और बाएं हाथ में चाँद लाकर रख दें, और (उसके बदले) यह चाहें कि मैं इस काम को छोड़ दूं तो भी मैं ऐसा नहीं कर सकूंगा, मुझे तो यह काम करना है यहाँ तक कि अल्लाह तआला इस काम को ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) कर दे या मैं इसी रास्तें में हलाक हो जाऊँ"।

यह कहते हुए रसूलुल्लाह सल्ल० की आँखों में आँसू आ गए, क्योंकि आप को यह एहसास हुआ कि यह मेहरबान चचा भी जो आपको आपकी आठ साला उम्र के वक़्त से यतीम भतीजा समझ कर बचाव और हिफ़ाज़त की फ़िक्र रखा करते थे और उनकी हिमायत से आपकी दुश्वारियों में कमी होती थी शायद अब बदले हुए मालूम होते हैं, और आप रो दिये और वापस तशरीफ़ ले जाने के लिए उठे, आपको इस तअस्सुर (प्रभाव) के साथ जाता देख कर मुशफ़िक़ चचा पर असर पड़ा और उन्होंने आपको आवाज़ दी और कहा कि मेरे भतीजे! आओ, आप सामने तशरीफ़ लाए, उन्होंने कहा, जाओ और जैसा तुम्हारा दिल चाहे करो, ख़ुदा की क़सम! मैं तुमको अपने से जुदा करके किसी के हवाले न करुँगा।

इस्लाम लाने वालों की परीक्षा—

ईमान लाने वालों की संख्या आहिस्ता आहिस्ता बढ़ी गई, कोई कलामे इलाही के एजाज़ (चमत्कार) से प्रभावित होकर, कोई रसूले ख़ुदा के अख़लाक़, एख़लास

और आपके हमदर्दाना तरीक़–ए–दअवत से प्रभावित होकर और आपके अमीन व सादिक़ होने का तजुरबा (अनुभव) रखने के आधार पर इस्लाम की तरफ़ माएल हुआ, इस तरीक़े से इस पैग़ामे हक़ को रोकने वाले बा असर लोगों की मुख़ालिफ़त के बावजूद वे लोग इस्लाम में दाखिल हो जाते थे, लेकिन मुख़ालिफ़ों की सख़्त मुख़ालिफत (विरोध) की वजह से इस दअवत को कुबूल करने वालों को बड़े ज़ुल्म व ज़ियादती का भी सामना करना पड़ता था, जो उनके सब्र व बर्दाश्त का बहुत बड़ा इम्तिहान था, और अल्लाह तआला का हुक्म भी था कि अपने हाथों को रोके रखो और नमाज़ व दुआ से ताक़त हासिल करते रहो। यह ऐसी हालत में था कि अरबों का मिज़ाज लड़ने–भिड़ने का था और मुक़ाबिले में हिम्मत न हारने का था, मगर वह इस मौक़े पर अपने मिज़ाज को दबाए रहे और अल्लाह की तरफ़ से सब्र का हुक्म मिलने पर सब्र पर क़ाएम रहे[1]।

लेकिन मक्के वालों की दुश्मनी मुसलसल बढ़ती रही, और तकलीफ़ देने और तशद्दुद (हिंसा) का रवैया इख़्तियार करने का सिलसिला भी बढ़ गया और बात इतनी बढ़ी कि एक मौक़े पर एक सहाबी ने रसूलुल्लाह सल्ल0 से अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह सल्ल0! हम कहाँ तक बर्दाश्त करें, पानी सर से ऊँचा हो गया, आप सल्ल0 टेक लगाऐ बैठे थे सीधे हो गए और ज़ोर देकर फ़रमाया कि अल्लाह की मदद ज़रूर आएगी, सब्र और हिम्मत से काम लो और देखो तुमसे पहले की क़ौमों ने, जिन्होंने दीने हक़ कुबूल किया उनको इससे भी ज़ियादा तकलीफ़ें पहुँचीं, आरा तक चला[2]।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तकलीफ़ पहुँचाना– कुफ़्फ़ारे कुरैश जिनमें आगे–आगे अबूजहल, अबूलहब, अस्वद बिन अब्दे मग़ूस, वलीद बिन मुग़ैरह, उमय्या बिन ख़ल्फ़, नज़र बिन हारिस, मुनब्बा बिन हज्जाज, उक़्बा बिन अबी मुईत, हकम बिन अबिल आस जैसे चोटी के लीडर थे जो हुज़ूर सल्ल0 के रास्ते में काँटे बिछाते, नमाज़ पढ़ते वक़्त हँसी उड़ाते, सज्दे में आपकी गर्दन मुबारक पर ओझड़ी डाल देते, गले में चादर लपेट कर इस ज़ोर से खींचते कि गर्दन मुबारक में बद्धियाँ पड़ जातीं, जादूगर कहते, दावा–ए–नबूवत सुनकर मजनू कहते, बाहर निकलते तो बदमाश लड़के पीछे–पीछे झुण्ड बांधकर चलते, नमाज़ में कुर्आन मजीद ज़ोर से पढ़ते तो कुर्आन करीम, कुर्आन मजीद लाने वाले रसूलुल्लाह सल्ल0 और कुर्आन के उतारने वाले (रब्बुल आलामीन) को गालियां देते[3]।

एक दफ़ा हुज़ूर सल्ल0 "हरम" में नमाज़ पढ़ रहे थे, रउसा–ए–कुरैश भी मौजूद थे, अबूजहल ने कहा: काश इस वक़्त कोई जाता और ऊँट की ओझड़ी नजासत समेत उठा लाता कि जब मुहम्मद सल्ल0 सज्दे में जाते तो उनकी गर्दन पर डाल देता, उक़्बा ने कहा: यह ख़िदमत मैं अन्जाम देता हूँ, चुनाँचि उसने ओझड़ी ला कर आप सल्ल0 की गर्दन पर डाल दी। कुरैश मारे ख़ुशी के एक दूसरे पर गिरे पड़ते थे, किसी ने जाकर हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 को ख़बर दी, वह अगरचि उस वक़्त सिर्फ पाँच छ: बरस की थीं, लेकिन मारे मुहब्बत से दौड़ती हुई आईं और ओझड़ी को हटा

1.सीरते इब्ने हिशाम : 1/293–315

2. बुख़ारी शरीफ़: हदीस नं0 3612

3. बुख़ारी शरीफ पेज : 686, मुस्नद इमाम अहमद बिन हंबल : 4/302, तब्क़ात इब्ने सअद : 1/200 सीरत इब्ने हिशाम : 1/289

कर उक्बा को बुरा भला कहा और बद दुआएं दीं[1]।

एक दफ़ा हुज़ूर सल्ल0 "हरम काबा" में नमाज़ पढ़ रहे थे, उक्बा ने आपकी गरदन में चादर लपेट कर ज़ोर से खींची, इत्तिफ़ाकन हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि0 आ गए और आप का शाना पकड़ कर उक्बा के हाथ से छुड़ाया और कहा कि ऐसे शख़्स को तुम मार डालना चाहते हो जो सिर्फ़ यह कहता है कि ख़ुदा एक है[2]।

दौस क़बीले के सरदार तुफ़ैल बिन अम्र रज़ि0 का क़ुबूले इस्लाम– हज़रत तुफ़ैल बिन अम्र दौसी जो क़बीले दौस के सरदार थे और मक्का ज़ियारत के लिए आए थे अपना हाल बयान करते हैं कि मैं एक रोज़ सुबह के वक़्त ख़ान–ए–काबा गया, नबी सल्ल0 नमाज़ पढ़ रहे थे, मैंने सुना कि एक निहायत अजीब कलाम पढ़ रहे हैं, कुरैश ने अगरचि मुझको मना किया था कि उनका कलाम न सुनना, यह जादू भरा कलाम है, तुमको बहका देगा, लेकिन मेरे दिल ने मुझसे कहा कि मैं ख़ुद शायर (कवि) हूँ, इल्म वाला हूँ, अच्छे बुरे की तमीज़ रखता हूँ, मैं कैसे धोखा खा जाऊँगा और अच्छे और बुरे के दरमियान फ़र्क़ न कर सकूँगा, फिर क्या वजह है और कौन सी रोक है कि मैं उसकी बात न सुनूँ, अच्छी बात होगी तो मानूंगा, वर्ना नहीं मानूं गा। मैं यह इरादा करके ठहर गया। जब नबी सल्ल0 वापस घर चले तो मैं भी पीछे–पीछे हो लिया और जब मकान पर हाज़िर हुआ तो नबी सल्ल0 को अपना वाक़ियां मक्का आने, लोगों के बहकाने, कानों को बन्द करने, और आज हुज़ूर सल्ल0 की ज़बान से कुछ सुन पाने का कह सुनाया, और अर्ज़ किया: मुझे अपनी बात सुनाइये नबी सल्ल0 ने क़ुर्आन पढ़ा। बख़ुदा! मैंने ऐसा पाकीज़ा कलाम कभी सुना ही न था, जो इस क़दर नेकी और इन्साफ़ की हिदायत करता हो। अलग़रज तुफ़ैल दौसी उसी वक़्त मुसलमान हो गए, उनका मुसलमान होना इस्लाम की एक ताक़त का सबब बना, क्योंकि वह अपने ख़ानदान दौस के सरदार थे जिसका असर पूरे क़बीले पर पड़ा[3]।

इसी तरह दूसरे लोगों का भी मुआमला था, जब आपकी मुख़ालिफ़त (विरोध) करने वाले अरबों में से कोई भी सादा दिली के साथ हुज़ूर सल्ल0 से मिलता और आपकी बात को तअस्सुब (पक्षपात) से ख़ाली ज़ेहन से सुन लेता तो फ़ौरन मान लेता, इस तरह क्रमशः लोग मुसलमान होते गए, अलबत्ता वह लोग जो क़बीले क़ुरैश के अन्दर सरदार और बड़े समझे जाते थे और अपने को श्रेष्ट और ऊँचे मुक़ाम पर समझते थे उनको यह दुश्वारी पेश आ जाती थी कि अपने क़बीले के अन्दर किसी दूसरे के मातहत कैसे आ जाएं, और अपने सरदाराना मुक़ाम से कम पर कैसे राज़ी हो जाएं, वह न सिर्फ यह कि इस्लाम कुबूल नहीं करते थे बल्कि सख़्त मुखालिफत भी करते थे। ❑❑

क़ुर्आन की शिक्षा..............

फायदा

यहूद कहते हैं मूसा अलैहि–स्सलाम की उम्मत को, और साबिईन एक फिरक़ा है जिसने हर एक दीन में से अच्छा समझकर अपना लिया है, और वह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को मानते हैं और फरिश्तों की भी पूजा करते हैं, तथा काबा की तरफ़ मुँह करके नमाज पढ़ते हैं। ❑❑

1. बुख़ारी–मुस्लिम
2 सहीबुखारी

3. सीरत इब्ने हिशाम : 1/382

? आपके प्रश्नों के उत्तर ?

–मुफ़्ती मुहम्मद जफ़र आलम नदवी

प्रश्न : गुटखा और सिगरेट का इस्तेमाल शरअन कैसा है ?।

उत्तरः गुटखा और सिगरेट के बारे में यह बात साबित हो चुकी है कि यह दोनों चीज़ें सिहत (स्वास्थ्य) के लिए हानिकारक हैं, रसूलुल्लाह सल्ल0 ने नशा लाने वाली और सिहत को नुक़सान पहुंचाने वाली चीज़ों से रोका है। अतः इन दोनों चीज़ों का इस्तेमाल दुरुस्त नहीं है और इनसे बचना वाजिब है।

(रद्दुल मुहतार 179/3)

प्रश्नः मच्छर को इलेक्ट्रिक शाट से मारना कैसा है ?।

उत्तरः खुदा की मखलूक़ को आग की सज़ा देने से रसूलुल्लाह सल्ल0 ने रोका है। इलेक्ट्रिक शाट आग से मारने के हुक्म में है। फ़ुकहा ने इसको मक्रूह लिखा है। फतावा हिन्दिया में सराहत है कि बिच्छू और जुएं को आग में जलाना मक्रूह है, मच्छर भी इसी हुक्म में है।

(फतावा हिन्दिया 361/5)

प्रश्नः कभी–कभी घरों में चींटियां बहुत ज़्यादा हो जाती हैं और तक्लीफ़ पहुँचाती हैं, इनको पाउडर वाली दवा से मारना दुरुस्त है या नहीं?।

उत्तरः चींटियाँ चूंकि तक्लीफ़ पहुँचाने वाले कीडे हैं इसलिये इन दवाओं से इनको मारना जो पाउडर की तरह होती हैं दुरुस्त हैं अलबत्ता आग में जलाना दुरुस्त नहीं। बल्कि मक्रूह है। हुज़ूर सल्ल0 ने इससे रोका है। फ़ुक़हा ने सराहत की है कि चींटियों के मारने में कोई हरज नही है। क्यों कि यह तक्लीफ़ पहुँचाने वालों में से हैं। (फतावा सानिया 410/3)

प्रश्नः शौहर बीवी से कितने दिनों तक अलग रह सकता है ? आज कल लोग बाहर मुल्कों में नौकरी के लिए कई–कई साल तक रहते हैं और बीवियाँ घरों में रहती हैं क्या शरीअत में इसकी इजाज़त है ?।

उत्तरः शौहर के लिये बीवी की इजाज़त और रज़ामन्दी के बिना चार माह से ज़्यादा अलग रहना दुरुस्त नही है हाँ अगर औरत मुतमइन हो और वह खुश दिली से शौहर को बाहर रहने की इजाज़त दे दे तो इसमें कोई हरज नहीं।

प्रश्नः एक लड़की की शादी हुई अभी शौहर के यहाँ पहुँची नहीं थी कि शौहर का एक्सीडेन्ट में इन्तिक़ाल हो गया, ऐसी सूरत में औरत महर की हकदार है या नहीं ?

उत्तरः मिया बीवी की मुलाकात से पहले अगर शौहर का इन्तिक़ाल हो जाए तो बीवी कुल महर की हकदार है, फतावा हिन्दिया में सराहत है कि अगर ज़ौजैन में से किसी का इन्तिक़ाल हो जाए तो औरत कुल महर की हकदार होगी।

(फतावा हिन्दिया 303/1)

प्रश्नः एक आक़िला बालिग़ा लड़की की शादी हुई अभी रुख़सती नहीं हुई थी कि लड़की तलाक़ का मुतालबा करती है ऐसी सूरत में शौहर अगर तलाक़ दे दे तो क्या बीवी महर की हक़दार होगी? और क्या उसे इद्दत का नफ़क़ा भी मिलेगा ?।

उत्तर: औरत की रुख़सती से पहले यानी मिया बीवी की मुलाक़ात से पहले तलाक़ दे दी जाए तो औरत आधे महर की हकदार होती है। इस तरह की औरत के लिए इद्दत नहीं होती है इसलिए शौहर पर इद्दत का नफ्क़ा नहीं है। अलबत्ता अगर लड़की महर के बदले में तलाक़ का मुतालबा करती है और शौहर इस को मंजूर कर लेता है तो औरत निकाह से खारिज हो जाएगी और महर न देना पड़ेगा। इस्लामी शरीअत में इसको खुला कहते हैं। (रद्दुल मुख्तार 456/2)

प्रश्न: अगर महर उधार मुकर्रर हो और काफी दिनों के बाद भी शौहर ने अदा नहीं किया और औरत इन्तिक़ाल कर गई तो उसकी महर का क्या होगा ? कुछ जगहों पर रवाज है कि लड़की के वालिदैन महर मुआफ कर देते हैं तो क्या महर मुआफ हो जाएगा ? या शौहर पर वाजिब रहेगा?।

उत्तर : यह महर शौहर के ज़िम्मे रहेगा वालिदैन के मुआफ करने से मुआफ नहीं होगा बल्कि औरत के मरने के बाद इस महर पर वरसा का हक़ रहेगा। जिसमें खुद शौहर भी वारिस होगा। अगर औलाद नहीं है तो शौहर को आधा मिलेगा और अगर मरने वाली औरत की औलाद मौजूद है तो शौहर का एक चौथाई हिस्सा होगा। बकिया औलाद का हक़ होगा।

प्रश्न: शौहर ने अपनी बीवी को उसकी अख़्लाक़ी खराबी की वजह से तलाक़ दे दी तो इस सूरत में क्या औरत महर की हक़दार होगी? क्या इसे इद्दत का नफ़्क़ा मिलेगा ?

उत्तर : इस सूरत में भी औरत महर की हक़दार होगी, अलबत्ता अख़्लाक़ी (बदकारी) की वजह से इद्दत का नफ्क़ा न पाएगी।

प्रश्न : बाल और दाढ़ी में ख़िज़ाब लगाने का क्या हुक्म है ?।

उत्तर : अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने बाल के लिए ख़िज़ाब के इस्तेमाल को पसन्द फ़रमाया है। ख़ासतौर से इसलिए भी कि इस्लाम के आरम्भिक दिनों में यहूदी और ईसाई ख़िज़ाब नहीं लगाते थे। लेकिन आप सल्ल0 ने काले ख़िज़ाब का इस्तेमाल नापसन्द फ़रमाया है। मक्का विजय के अवसर पर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 के पिता हज़रत कहाफ़ा रज़ि0 जब अल्लाह के रसूल सल्ल0 के सामने पहुँचे तो उनके बाल और उनकी दाढ़ी एकदम सफ़ेद हो चुकी थी। आप सल्ल0 ने जब देखा तो लोगों को उन पर ख़िज़ाब लगाने का सुझाव दिया। लेकिन साथ ही यह भी कहा कि काले ख़िज़ाब से परहेज़ किया जाए। हज़रत जाबिर रज़ि0 ने इसकी रिवायत की है और यह 'मुस्लिम' में दर्ज है।

हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फ़रमाया कि काला ख़िज़ाब लगाने वाले जन्नत की महक से भी महरूम होंगे।

(अबू दाऊद)

मेंहदी और पीले रंग के ख़िज़ाब को आप सल्ल0 ने पसन्द किया है। इसलिए काले ख़िज़ाब के इस्तेमाल को मक्रूह ठहराया गया है। काले ख़िज़ाब के निंदनीय होने पर सारे फुक़हा एकमत हैं। सिर्फ़ मुजाहिदों को इसकी अनुमति दी गयी है, ताकि दुश्मनों पर रौब रहे। कुछ दूसरे लोगों ने नवजवान बीवी की रियायत करते हुए भी इसे जायज़ ठहराया है, इनमें इमाम यूसुफ़ भी हैं।

इसहाक़ रह0 ने बीवी को इजाज़त दी है कि वह शौहर के लिए आराइश (श्रृंगार) के तौर पर ख़िज़ाब लगा सकती हैं।

जो हुक्म काले ख़िज़ाब का है वही काली ख़िज़ाबी कंघी का है, जिस तहर दूसरे रंग के ख़िज़ाब के इस्तेमाल की इजाज़त है, उसी तरह उस रंग की ख़िज़ाबी कंघी का इस्तेमाल भी किया जा सकता है।

जहाँ तक मेंहदी का सवाल है तो इसका इस्तेमाल औरतों के लिए न केवल यह कि जायज़ है, बल्कि बेहतर और पसन्दीदा है, लेकिन मर्दों को इसकी इजाज़त नहीं है। इमाम नौवी का बयान है कि इसका इस्तेमाल मर्दों के लिए हराम है, सिवाये इसके कि दवा वग़ैरह के लिए इसकी ज़रूरत पड़ जाए, यहां तक की फ़ुक़हा ने छोटे बच्चों को भी लगाने से मना किया है।

'खुलासतुल फ़तावा' में है– "नाबालिग़ बच्चे के भी हाथ में लगाना मुनासिब नहीं, इसलिए कि यह आराइश है, जो सिर्फ़ औरतों के लिए जाइज़ है।

(जदीर फ़िक्ही मसाइल–1 से)

प्रश्न : किसी व्यक्ति के शरीर के किसी कटे हुए अंग का दोबारा उसके शरीर में प्रत्यारोपण करना शरीअत की नज़र में कैसा है?

उत्तर : मानव शरीर के इलाज के लिए कृत्रिम या मनुष्य के अलावा दूसरे जानदार के अंगों के प्रत्यारोपण का तो औचित्य है, लेकिन इसमें मतभेद है कि मनुष्य के अपने शरीर के कटे हुए किसी अंग का दोबारा उसके शरीर में प्रत्यारोपण किया जा सकता है या नहीं। उलमा का एक वर्ग इसे जायज़ नहीं समझता इसलिए कि शरीर का जो अंग शरीर से कट गया, उसे दफ़न किया जाना वाजिब है। उस अंग को दोबारा प्रयोग में लाना उसे उसके हक़ से रोकना है।

जिन लोगों ने एक मनुष्य के अंग को दूसरे मनुष्य के शरीर में प्रत्यारोपण की अनुमति दी है, उन्होंने आवश्यक होने पर ही इसे जायज़ ठहराया है। इसका आधार वह फ़िक्ही नियम है, सिके अनुसार आवश्यकता पड़ने पर नाजायज़ चीजें जायज़ ठहरायी जाती हैं या यह नियम की कठिनाई पैदा हो जाए तो आसानी का मार्ग अपनाया जाता है। इन नियमों के पक्ष में कुर्आन की वे आयतें भी हैं जिनमें जान बचाने के लिए मजबूरी की हालत में हराम चीज़ों के खाने या जान बचाने के लिए कलिमा–ए–कुफ़्र जुबान से अदा करने की अनुमति दी गयी है।

जिन लोगों ने अंग प्रत्यारोपण से रोका है, उन्होंने इसके विभिन्न कारण बताये हैं। जैसे मनुष्य के अलग हो गए अंग का नापाक होना, हराम होना, मनुष्य का स्वयं अपने शरीर का मालिक न होना और अल्लाह की ओर से अपने शरीर का अमानतदार होना।

लेकिन ये सारे प्रमाण वे हैं, जिनकी रिआयत ख़ुद फ़ुक़्हा ने की है। इन्सानी ज़रूरत को देखते हुए नापाक और हराम चीज़ों से इलाज की अनुमति भी गयी है और अपने शरीर पर वह अधिकार भी दिया है, जो कुर्आन और हदीस से सीधे न टकराता हो।

असल कारण जो अंग प्रत्यारोपण से रोकने वाले उलमा ने पेश किया है वह मानव आदर एवं सम्मान की सुरक्षा है। अधिकतर फ़क़ीहों ने मानव अंगों के प्रत्यारोपण से इसलिए मना किया है कि मनुष्य ख़रीदने और बेचने की चीज़ न बन जाए। यह मनुष्य की प्रतिष्ठा और सम्मान के विरुद्ध है। और चूंकि प्रतिष्ठा एवं सम्मान में जीवित और मृत दोनों समान है, इसलिए न जीवित मनुष्य के अंग इसके लिए इस्तेमाल किये जा सकते हैं और न मृतक के।

इस सम्बन्ध में सबसे स्पष्ट रिवायत वह हदीस है कि "मृतक व्यक्ति की हड्डी तोड़ना वैसा ही है, जैसे जीवित हालत में उस व्यक्ति की हड्डी तोड़ना"।
(जदीद फ़िक्ही मसाइल भाग–5)

प्रश्न : अगर कोई शख्स अपनी ज़िन्दगी ही में अपनी कुल जायदाद अपनी औलाद के बीच बांटना चाहे तो ऐसा कर सकता है या नहीं? अगर बांट सकता है तो किस तरह बांटे?।

उत्तर : अगर कोई अपनी जायदाद को अपनी ज़िन्दगी में अपनी औलाद के बीच तक्सीम करना चाहे तो शरअन इसकी इजाजत है, अलबत्ता तक्सीम का तरीका यह है कि लड़के और लड़कियों में बराबर तक्सीम करे अगर कमी बेसी करेगा तो अल्लाह के यहां बाज पुर्स होगी। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया कि अल्लाह तआला से डरो और अपनी औलाद के बीच (हिबा आदि में) बराबरी करो इस लिए फुक़हा ने लिखा है कि अगर जिन्दगी में जायदाद कोई अपनी औलाद में तक्सीम करे तो उनके दरमियान बराबरी के साथ तक्सीम करे अल्लामा शामी ने सराहत की है कि बेटी को बेटे की तरह हिस्सा दिया जायगा और इसी पर फत्वा है।

प्रश्न : अगर कोई शख्स अपने किसी लड़के को सारी जायदाद हिबा करे और दूसरी औलाद को न दे तो क्या इसमें कोई हरज है?।

उत्तर : अपनी कुछ औलादों को महरूम (वंचित) करने की गरज से किसी लड़के को जायदाद देना और किसी को न देना ना इन्साफी है, अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने इससे रोका है, एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इर्शाद फरमाया कि जो अपने वारिस को नाहक विरासत से महरूम करेगा अल्लाह तआला कियामत के दिन उसको जन्नत से महरूम कर देगा।

प्रश्न : एक शख्स ने अपना मकान अपने लड़कों को अपनी ज़िन्दगी में हिबा कर दिया लेकिन कब्जा नहीं दिया इस शख्स की वफात (देहान्त) के बाद क्या लड़कियां इस मकान मे हिस्सा पायेंगी या नहीं? या मकान सिर्फ लड़कों का ही होगा?

उत्तर : हिबा मुकम्मल होने के लिए कब्ज़ा ज़रूरी है चूँकि मज़कूर शख्स ने अपनी ज़िन्दगी में अपने हिबा किए मकान पर लड़कों को कब्ज़ा नहीं दिया लिहाजा यह हिबा मुकम्मल (पूर्ण) नहीं हुआ अब यह मकान तमाम वरसा लड़के और लड़कियों में बतौर **विरासत** तक्सीम होगा लिहाजा इसमें लड़कियों को भी हिस्सा मिलेगा।
फतावा हिन्दिया 377/4)

प्रश्न : एक शख्स ने किसी मसलिहत की वजह से किसी एक बेटे के नाम जायदाद खरीदी क्या इस जायदाद का मालिक अकेला वही बेटा होगा? या बाप की मिल्क होगी? और दूसरे वारिसों के बीच क्या यह जायदाद तक्सीम होगी?

उत्तर : वालिद अगर किसी मसलिहत से किसी बेटे के नाम से कोई जायदाद ख़रीदे तो वह बेटा महज़ उसके नाम पर खरीदने की वजह से शरई तौर पर उस जायदाद का मालिक न होगा बल्कि वह बाप ही की मिल्क होगी और बाप की वफात (देहान्त) के बाद तमाम वारिसों में तक्सीम होगी
(इम्दादुल फतावा 17/2)

प्रश्न : एक शख्स ने कुछ चीजें अपनी बीवी को बतौर बख्शिश (उपहार) दे दी हैं और उसका कब्ज़ा भी करा दिया है अब अगर यह शौहर बख्शिश की हुई चीज़ें वापस लेना चाहे तो ले सकता है या नही?

उत्तर : बीवी को हिबा (उपहार) की हुई चीज़ें वापस नहीं ली जा सकतीं, हिदाया में लिखा है कि मियां बीवी में से कोई एक दूसरे को कुछ हिबा करदे तो वापस नहीं ले सकते।

(हिदाया 274/3)

प्रश्न : एक मुसलमान अपने एक गैर मुस्लिम दोस्त को उसकी वफादारी के बदले में एक मकान वसीयत करना चाहता है क्या इस्लामी शरअ में इसकी इजाज़त है कि किसी गैर मुस्लिम को मकान या जायदाद वसीयत की जाए?।

उत्तर : गैर मुस्लिम के लिए वसीयत की जा सकती है बदाइउस्सनाए में वजाहत की है कि वसीयत दुरुस्त होने के लिये मुसलमान होना शर्त नहीं है लिहाज़ा अगर कोई मुसलमान किसी गैर मुस्लिम को अपनी जायदाद का तिहाई भाग या उससे कम वसीयत करे तो वसीयत दुरुस्त होगी।

(बदाइउस्सनाए 314/7)

प्रश्न : एक शख्स लावल्द है उसने एक बच्चे को गोद लिया और उसे अपना बेटा बना लिया क्या वह बच्चा उसकी जायदाद का वारिस होगा या नही? क्या उसे कुल जायदाद वसीयत की जा सकती है या नहीं?।

उत्तर : गोद लिया बच्चा, बेटा नहीं होता अगर व वारिसों में न हो तो सिर्फ गोद लिया बच्चा होने की वजह से जायदाद का वारिस न होगा और न कुल जायदाद उसे वसीयत की जा सकती है अलबत्ता एक तिहाई जायदाद उसे वसीयत की जा सकती है बकिया जायदाद वारिसों में तक्सीम होगी।

प्रश्न : एक औरत ने अपनी जायदाद का कुछ हिस्सा अपने एक बेटे के लिए मरते वक़्त वसीयत कर दी तो क्या यह वसीयत जारी होगी या नहीं? जब कि उस औरत की और दूसरी औलाद भी है?।

उत्तर : वसीयत वारिस के हक में नाफ़िज़ (जारी) नही होगी लिहाज़ा मजकूरा औरत की तमाम जायदाद तमाम वरसा में शरई हिस्से के मुताबिक तक्सीम होगी।

प्रश्न : क्या औरतें जनाजे की नमाज में और जनाजा दफन करने में शरीक हो सकती हैं?

उत्तर : औरतें नमाज़े जनाजा के लिये नहीं निकल सकती हैं इसी तरह तदफ़ीन के लिए भी नहीं जाएंगी।

प्रश्न : हमारे यहां रवाज है कि मुर्दे को दफन के वक्त कब्र में बेरी की हरी टहनी रखते हैं इस का क्या हुक्म है?

उत्तर : क़ब्र में दफ़न के वक्त बेरी की हरी टहनी रखने में कोई हरज नही है। बेरी की कोई तख्सीस नहीं। किसी भी हरे दरख्त की लकड़ी रखी जा सकती है शायद इसका रवाज उस रिवायत के सबब पड़ा हो जिस में है कि नबी सल्ल0 ने एक क़ब्र पर हरी शाख़ रखी थी और फरमाया था कि जब तक यह शाख हरी रहेगी उसकी तस्बीह से मुर्दे पर अज़ाब न होगा। अगरचे यह नबी सल्ल0 का मोजिज़ा था लेकिन इस रिवायत से क़ब्र पर हरी टहनी रखने की गुंजाइश है। बेरी की तख्सीस शायद इसलिये हो कि बेरी का ज़िक्र कुर्आन मजीद में है।

प्रश्न : क़ब्र खोदने में अगर उसमें इन्सानी हड्डियां निकलें तो उनको क्या करें?

उत्तर : उसी क़ब्र में मुर्दे के साथ एक किनारे रख दें।

❖❖❖

भली बातें

—नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

एक बार अपने पिता के साथ सादी यात्रा पर निकले। काफिले ने एक स्थान पर रात्रि में पड़ाव डाला। लोगों के साथ सादी और उनके पिता ने भी खेमा डाल दिया।

काफिला ठहरा तो खाने–पीने से फुर्सत पाकर सादी कुर्आन का पाठ (तिलावत) में जुट गए। अल्लाह वालों को रात में इबादत करने में जो मज़ा आता है उसे शब्दों में बयान करना सम्भव नही। रात के अंधेरे में अपने बन्दों को सज्दे में देखकर अल्लाह बहुत खुश होता है। खैर! सादी तिलावत कर चुके तो कुछ देर के लिए सो गए। फिर तहज्जुद की नमाज़ के लिए उठे। तहज्जुद में चुस्ती और मन रमाने के लिए एक नींद सो लेना बेहतर होता है।

एक नींद लेने के बाद सादी उठे, वुजू किया और नमाज़ पढ़ी। नमाज़ पढ़ने के बाद देखा कि काफिले वाले बड़े मज़े से पाँव फैला कर गहरी नींद सो रहे हैं। उन्हें इस पर बहुत दुख हुआ और अपने पिता से कहा, आप देख रहे हैं, कैसे ये लोग घोड़ा बेच कर सो रहे हैं?। उनके पिता ने तुरन्त पलट कर पूछा, तुम्हारा कहने का मतलब क्या है भई?

सादी ने नागवारी से कहा, इनसे ये नहीं हो रहा है कि उठ कर तहज्जुद की नमाज़ पढ़ लें।

उनके पिता ने कहा, अरे मेरे लाल! तू भी सोता रहता तो अच्छा था। ये क्या कि कुर्आन व नमाज़ पढ़ कर तू दूसरे की बुराई करने लगा। ये तो परोक्ष निन्दा (ग़ीबत) है और ग़ीबत करना और सुनना दोनों हराम है।

आदमी भी बड़ा बेवकूफ होता है। ज़रा सा अच्छा काम क्या कर लिया लगा इतराने। हर किसी को लगा उपदेश देने।

इसी प्रकार की एक दूसरी घटना सुनते चलिये। हमारे हज़रत अली रज़ि0 के शासन काल में एक भीड़ जमा थी। भीड़ के बीचोबीच एक अपराधी खड़ा था। हर किसी की आँखें उस पर लाल थीं और ज़बान से उस पर लानत भेजी जा रही थीं। वह बन्दा भी गर्दन गडाये शून्य में निहार रहा था। और शर्म से पानी–पानी हो रहा था। दरअस्ल उस बेचारे से एक पाप हो गया था। जिसके कारण उसको इस्लामी विधिनुसार दण्ड दिया जाना था।

लोगों की गन्दी आदत है कि किसी से कुछ गलती हो जाए तो उस पर चढ़ बैठते हैं। उसे बुरा–भला कहने में तनिक भी देर नहीं लगाते। मानो वह स्वयं के बारे में सिद्ध कराते हैं कि हम मानव नहीं बल्कि फरिश्ते हैं जिससे न कभी गलती हुई और न हो सकती है। हालांकि सोचना चाहिये कि यदि उसकी जगह हम होते तो क्या होता?।

हज़रत अली रज़ि0 के सामने जब उस अपराधी को पेश किया गया। और लोगों के व्यवहार का हज़रत अली रज़ि0 ने देखा तो भीड़ से पूछा कि क्या तुम सब मुसलमान हो?।

लोगों ने कहा जी हाँ!

हज़रत अली रज़ि0 ने कहा— अल्लाह की महानता को तुम लोगों से बेहतर कौन समझ सकता है। मैं तुम लोगों को अल्लाह की कसम देकर कहता हूँ कि तुममें से जिसने कभी पाप किया हो वह यहाँ से चला जाए। इस अपराधी को वही लोग बुरा समझ सकते हैं जिन्होंने

शेष पृष्ठ ....24 पर

अच्छे लोगों की संगत और उसका प्रभाव

–मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी अनु0–नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

सन्देष्टाओं की संगत के लिए ईमान (आस्था) और औलिया (संतों) की संगत के लिए इख्लास (निः स्वार्थता) शर्त– संगत में निःस्वार्थता शर्त है। यदि निः स्वार्थता से नहीं आएंगे तो कुछ नहीं मिलेगा। नबियों की संगत में रहने वालों के लिए सिर्फ ईमान शर्त है। जो कहे कि हम ईमान लाए अल्लाह पर, आप पर, और उन सभी चीज़ों पर जिनका आदेश दिया गया है। बस उनका काम बन गया। लेकिन औलिया (संतों) की संगत में रहने के लिए निः स्वार्थता (इख्लास) शर्त है। यदि निः स्वार्थता के साथ रहेगा तो लाभ उठाएगा। अगर इख्लास नहीं तो चाहे एक हज़ार साल रहेगा, फायदा नहीं होगा। और बात यही है कि उनकी संगत से जो बात पैदा होती है, वह है मन–मस्तिष्क में विश्वास की भावना का जन्म होना। इसी लिए एक ताबअी ने अपने शिष्यों से कहा कि तुम यदि सहाबा (सहचरों) को देखते तो उन्हें पागल, दीवाना समझते, और यदि सहाबा तुम्हें देख लेते तो बेईमान समझते। सहाबा रज़ि0 इस्लाम के लिए इतने बेचैन रहते कि लोग उन्हें दीवाना समझते। उन्हें न खाने की परवाह, न पत्नी की, न बच्चों की और न किसी भी चीज़ की। चिन्ता थी तो उन्हें केवल अल्लाह की और उसके आदेशों की।

ऐसी भी घटना हुई है कि निकाह हुआ, बीवी के पास रात गुज़ारी कि इतने में जिहाद का ऐलान हो गया, तुरन्त जिहाद करने चल पड़े और शहीद हो गए। और फरिश्तों ने उन्हें नहलाया। सहाबा रज़ि0 का जो मामला था वह केवल हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की संगत का परिणाम था। बहर हाल संगत का प्रभाव तो पड़ता ही है। इसलिए हमको, आपको जिसकी संगत में रहना है, उसको चेक करना होगी कि वह कैसा है?।

पत्नी कैसी हो?

यहाँ हमारे नौजवान हैं, जिनकी शादी नहीं हुई है, उन्हें शादी करनी है, क्योंकि पत्नी की संगत में अत्यधिक रहना होता है, इसलिए पत्नी धार्मिक प्रवृत्ति की होनी चाहिये। लोग शादी करते हैं, धन के कारण, सुन्दरता के कारण, अमीर घराने के कारण, और चौथे नम्बर पर दीनदारी के कारण। धार्मिक प्रवृत्ति की पत्नी यदि घर में आ गई तो हर तरह से मज़े ही मज़े हैं। घर में खुशियाँ रहेंगी। जो बच्चे होंगे वह अच्छे होंगे। इसलिए कि बच्चे को जो प्रथम संगत मिलती है, वह है माँ की, फिर बाप की। तो माँ अच्छी होनी चाहिये, फिर बाप अच्छा होना चाहिए। उन दोनों के अन्दर अगर दीनदारी है तो सब कुछ अच्छा हो जाएगा। फिर नम्बर आता है गुरु–शिक्षक का, तो शिक्षक को अच्छा होना चाहिये। अब ये कोई नहीं देखता। न पत्नी न शिक्षक। देखता है तो केवल पैसा, शोहरत और ऊपरी रख रखाव को। परिणाम। "चार दिन की चाँदनी, फिर अन्धेरी रात"। धार्मिक पत्नी की निशानी ये है कि जैसे–जैसे आयु बढ़ती जाती है, मुहब्बत बढ़ती जाती है, और उसकी दीनदारी की बरकतें ज़ाहिर होने लगती हैं।

हम लोग संगति का अर्थ केवल ये समझते हैं कि अल्लाह वालों के पास चले जाना। आप किसी चीज़ को इतना ख़राब कर

दें, फिर उसको ले जाएं किसी बड़े कारीगर के पास कि उसको ठीक कर दो, जो चाहोगे मिलेगा। जब वह उसमें अनेक ख़राबियाँ देखेगा और जब बना पाने में असमर्थ होगा तो झुंझला जाएगा, और कहेगा कि यार! कहां तक ठीक करूँ? थोड़ा बहुत बिगड़ा होता तो बना भी देता, सभी सामान ख़राब है अब बना पाना बहुत मुश्किल है। इसी तरह दोस्ती–यारी और दूसरी चीज़ों का मसला होता है कि गलत लोगों से दोस्ती गाँठी, गुरु का अपमान किया, हराम खाया, सारी गलतियां की। अब बताइये बरसों का बिगड़ा दो दिन में कैसे ठीक हो जाएगा। इसलिए हमें संगत की चिन्ता शुरु से ही करनी चाहिये। पहले पत्नी अच्छी होनी चाहिये और किसी को यदि माँ–बाप अच्छे मिल जाएं तो "सोने पर सुहागा"। इसके अतिरिक्त यदि माहौल भी अच्छा हो, घर की महिलाएं भी अच्छी हों तो फिर क्या कहने।

हज़रत अबू बक्र रज़ि0 और हज़रत उमर रज़ि0 एक स्थान पर हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के इस नश्वर संसार से कूच कर जाने के कारण दुखी बैठे थे। दोनों ने कहा, चलो अम्माँ के यहाँ चलते हैं। अम्माँ अर्थात उम्मे ऐमन रज़ि0 हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के घर में रहती थीं, उनके घर को बरकतें हासिल थीं और ऐसी बरकत वाली औरत थीं कि जब मक्का को छोड़ कर मदीने चलीं तो रास्ते में बड़े ज़ोर की प्यास लगी, इतनी की गला सूखने लगा अल्लाह ने तुरन्त आसमान से पानी का डोल लटकाया, और फिर उन्होंने जी भर पीया। अल्लाह ने उस पानी में ऐसी बरकत दी कि फिर उन्हें जिन्दगी भर प्यास न लगी। खैर! वह दोनों उनके यहाँ पहुँचे। आप सल्ल0 की बात छिड़ी तो वह रोने लगीं। दोनों ने पूछा कि अम्मा आप क्यों रो रही हैं? आप सल्ल0 तो बहुत ऊँचे मुकाम पर हैं। जन्नत के सबसे ऊँचे दरजे में हैं। कहा कि बेटा इसलिए नहीं रो रही हूँ। पूछा, फिर क्यों रो रही हैं? कहा, मैं इसलिए रो रही हूँ कि "वही" (ईशवाणी) आनी बन्द हो गई। वह ईशवाणी का मूल्य जानती थीं। इसी कारण वह दोनों महामना हज़रत उम्में ऐमन रज़ि0 के यहाँ उपस्थित होते थे।

हमारे हज़रत मौलाना अली मियां नदवी रह0 की माँ माशा अल्लाह बहुत ही महान महिला थीं। अल्लाह ने उनको कैसा नवाज़ा था। पूरे घर के लोग उनके पास जाकर बैठते थे, उनके पास बैठने से एक आत्मिक शान्ति मिलती थी। वह ढ़ाई बजे उठ जाती, इश्राक़ की नमाज़ तक अपने मुसल्ले पर बैठी रहती थीं। उनका ये नियम आखिरी सांस अर्थात 93 साल तक जारी रहा। वह अल्लाह के सामने रोती और गिड़गिड़ाती थीं। उनकी महानता और बुजुर्गी की सबसे बड़ी निशानी ये थी कि ख़्वाब में हज़रत मुहम्मद सल्ल0 से बैअत हुईं। स्पष्ट है कि उनके पास बैठना, उनकी संगत में रहना कितनी बड़ी बात है। उनके पास बैठने से बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ता था। हमारे हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी उनकी संगत में पले–बढ़े थे।

हदीस में आता है कि व्यक्ति अपने मित्र के धर्म पर होता है। ये छुपी हुई बात है, चाहे कोई माने या न माने। तो देख लेना चाहिये कि किस से दोस्ती कर रहे हो, तुम्हारी दोस्ती का रुझान किधर है, दिल किस से लगता है, कौन साथी तुम्हारा ज़्यादा साथ देता है। यदि वह अच्छा है तो तुम अच्छे हो। यदि वह बुरा है तो तुम बुरे हो। लोग आसानी से कह देते हैं अरे भई सिर्फ दोस्त है, मैं उसके तरीके पर थोडे ही हूँ। हालांकि ये सरासर झूट है,

तुम स्वयं को और दूसरे को मूर्ख बना रहे हो। संगत का प्रभाव तो पडता ही है। व्यक्ति जिस प्रवृत्ति का होता है वह वैसा ही दोस्त बनाता है। जो उल्टे–सीधे लोग होते हैं, वह उल्टे–सीधे लोगों को तुरन्त पहचान लेते हैं। जो भले लोग होते हैं वह भले लोगों को पहचान लेते हैं। इसलिए कि जो जैसा होता है, वैसे ही लोगों को ढूँढता फिरता है।

आप यदि चोर के साथ रहेंगे तो चोरी न सही, हेरा–फेरी तो करेंगे ही। आप झूटे के साथ रहेंगे तो झूट न सही अतिशयोक्ति (मुबालगा) तो करेंगे ही। चाहे कितना ही अपने आप को बचाएं। इसलिए हमें चाहिये कि हम अच्छे लोगों की संगत में अपना समय व्यतीत करें। अच्छे लोगों से दोस्ती करें। उलमा की संगत में बैठें। वास्तव में जिनके अन्दर विशेषता है उनके पास रहें। अब जो हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की सुन्नत के क़रीब जितना होगा वह उतना ही उनकी पैरवी करने वाला होगा। इसलिए उसकी संगत में उतना ही बैठना चाहिये। जो जितना सुन्नत की पैरवी करने वाला होगा उतना ही उसकी संगत से लाभ प्राप्त होगा। और ये बात ध्यान में रहे कि कोई कितना ही चमत्कार दिखाए लेकिन सुन्नत पर चलने वाला न होगा तो न तो बरकत होगी न नफा न असर।

अत्यधिक प्रभावित होना और श्रद्धा में सीमोल्लंघन और मिथ्याचारी होने की निशानी–

एक बात और समझ लें, लोग कहते हैं कि एक दम से भूचाल आ जाए। भूचाल का नाम तासीर नहीं है। ये अत्यधिक प्रभावित होने की निशानी है। अत्यधिक प्रभावित होना मिथ्याचारी होने की निशानी है। स्थिति ये हो गई है कि जिसने भी चमत्कार दिखाया उसके पीछे हो लिये। बिदअतियों का यही हाल है। एक सबसे बड़े बिदअती पीर जिनकी काफी शोहरत है। मुम्बई में बीमार हुए तो अस्पताल में बड़े–बड़े सेठ मिलने आने लगे। एक दिन उन्होंने कहा कि बड़े पीर शैख अब्दुल क़ादिर जीलानी रह0 मुझसे मिलने आने वाले हैं ताकि मेरी मिजाजपुर्सी करें। आपको तो पता ही है कि कुछ सेठों की अक़्लें मारी जाती हैं। अतः उन सबने अस्पताल की सफाई करवाई। इत्र छिड़के, डेकोरेट करके लाइन से खड़े हो गए कि अभी हज़रत आएंगे। सहसा एक गाडी आई, उसमें से एक सफेद दाढ़ी, पगडी (अमामा) बाँधे हुए एक साहब उतरे और सीधे अन्दर चले गए और दरवाज़ा बन्द कर दिया। उसके बाद दरवाज़ा खुला ही नही। एक दो घण्टे बाद ख़बर आई कि हज़रत वहीं से चले गए, वापस नहीं आएंगे, इसलिए आप लोग जाइये। अरे वह वापस आते कैसे? वह तो दाढ़ी लगा कर, काजल लगाकर और बहरूपिया बनकर आए थे, अन्दर जाकर दाढ़ी उतार ली, चेहरा साफ कर लिया और चले गए। इधर उनके सभी अन्धे मुरीद कहते न अघा रहे हैं कि वाह! हमारे हज़रत का क्या ऊँचा मुकाम है। इस झूटी महानता पर लोग उन्हें सज्दे पर सज्दे कर रहे हैं, उनका हाथ चूम रहे हैं। और कहते जा रहे हैं कि इनसे बड़ा तो कोई पैदा ही नहीं हुआ। वास्तव में ये सब तमाशे हैं। लोग ये सोचते हैं कि ये तासीर है, ये तासीर नही है बल्कि श्रद्धा में सीमोल्लंघन और बेजा व गलत असर है। उनकी अन्ध भक्ति की सीमा देखिये कि हज़रत ने कह दिया कि अब कुछ करने की आवश्यकता नही है, नमाज–रोज़ा सब माफ। मैं तो कहता हुँ कि वह पीर नहीं पैर होते हैं। इसीलिए सब परेशान हैं कि दो मिनट में काम हो जाए, चमत्कार हो जाए। ये सब कुछ नहीं, सुन्नत की पैरवी करने वाले को देखिये, अच्छे लोगों की संगत अपनाइये, क्योंकि जो जितना सुन्नत

शेष पृष्ठ ....24 पर

पुरानी यादें और नई समस्याएं

–ए0जे0 खान

सन् 1947 की बात है, जब देश आज़ाद हुआ और चारों ओर खुशियों का माहौल बना। उस समय मैं मिडिल स्कूल तिलोई (रायबरेली) में सातवीं कक्षा का छात्र था। मिडिल स्कूल से अभिप्राय 5,6,7 की कक्षाओं का स्कूल। अब इसे जूनियर हाई स्कूल कहते हैं जिसमें कक्षा 6,7,8 की पढ़ाई होती है। उस समय कक्षा 7 की परीक्षा रजिस्ट्रार डिपार्टमेन्टल परीक्षायें, इलाहाबाद द्वारा सम्पन्न होती थीं। मैंने यह परीक्षा आज़ादी के तुरन्त बाद जून 1948 में उत्तीर्ण की थी। तब मिडिल स्कूल में अँग्रेज़ी विषय सम्मिलित नहीं था। इसलिए मिडिल स्कूल के उत्तीर्ण छात्रों का, अँग्रेज़ी स्कूलों में प्रवेश कक्षा 8 के बजाय कक्षा 6 में होता था। यह मेरा सौभाग्य था कि आज़ादी ने मुझे दो वर्ष का लाभ दिया और मेरा प्रवेश जूलाई 1948 में राजकीय इण्टर कालेज रायबरेली में कक्षा 8 में हुआ। मेरा ऐसा मानना है कि यह करिश्मा मेरे उन अध्यापकों की दुआओं के असर से हुआ, जो मिडिल स्कूल में मेरे आदर्श शिक्षक थे। मैं अपना यह लेख उन्हीं अध्यापकों को समर्पित कर रहा हूँ।

मेरे वे अध्यापक निष्ठावान, मेहनती, दयालू और सरल स्वभाव के थे। वे कक्षा में अपना–अपना विषय बड़ी तत्परता, मेहनत और लगन से पढाते थे। वे अपने विषय की पूरी जानकारी रखते थे। बिना किसी स्वार्थ और आर्थिक लाभ के वे रात में भी पढ़ाई का क्रम जारी रखते थे। शाम को 10 से 12 बजे और सवेरे 5 से 7 बजे तक वे स्वयं जाग कर अपने छात्रों को पढने की प्रेरणा देते थे। उन्हें बस इसी बात में संतोष था कि उनके छात्र अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होकर, उनका, विद्यालय और देश का नाम करें।

मैं अपने उन अध्यापकों की त्याग की भावना को कभी भूल नहीं सकता। उनके चेहरे सदैव मेरे सामने रहते हैं। मुझे याद है कि मेरे गणित विषय के अध्यापक श्री राम शरण सिंह और सामाजिक विषय के अध्यापक श्री मौलवी हलीम बख्श थे। मैं इनकी सादगी और इमानदारी को कभी भूल नहीं सकता। इन अध्यापकों ने मिडिल स्कूल स्तर पर अपने विषय की इतनी अच्छी और गहरी जानकारी दी जो हाई स्कूल स्तर के बराबर थी। मुझे स्कूल की परीक्षा देने में उस समय की पढाई से बहुत लाभ मिला। गणित और सामाजिक विषय में पढाये गये पाठ मेरे अब तक काम आ रहे हैं। मैं उस वक्त की पढ़ाई की तुलना आज से करता हूँ तो बहुत तकलीफ़ होती है। आज ट्यूशन का युग है। छात्र को 'ट्यूशन' पढ़ना आवश्यक हो गया है। जो छात्र, विषय अध्यापक का 'ट्यूशन' नहीं करते, उन्हें कक्षा में प्रताडित किया जाता है, सज़ायें दी जाती हैं, और अन्ततः ऐसे छात्रों को फेल भी कर दिया जाता है। कितना बदलाव आ गया है आज के अध्यापक में। आज का अध्यापक स्कूल में पढ़ाना नहीं चाहता। बस कक्षा में थोड़ा बहुत पढ़ाकर समय काटता है। बिना अतिरिक्त लाभ के वह एक अक्षर

भी पढ़ाना नहीं चाहता। अब तो स्कूल के बजाये घरों में कक्षायें लगाई जाती हैं। एक–एक बैच में 30 से अधिक बच्चों को सम्मिलित कर 500 रूपये से अधिक प्रति छात्र वसूल किया जाता है। अभिभावकों और छात्रों का शोषण किया ज़ा रहा है। शिक्षा में भ्रष्टाचार का आना बड़ी चिन्ता की बात है। आज का अध्यापक बहुत भ्रष्ट हो गया है। वह सोचता है कि जब पूरा समाज भ्रष्ट है तो मैं क्यों पीछे रहूं। बहती गंगा में हाथ धोने से मतलब। लोग क्या सोचते है इस से कोई सरोकार नहीं।

आज भ्रष्टाचार से कोई अछूता नहीं। इन्जीनियर, डॉक्टर, अध्यापक, बुद्धिजीवी, राजनेता सभी अपनी शक्ति भर 'भ्रष्टाचार' में लिप्त हैं। हर क्षेत्र में इसका बोल बाला है। कितने दुख की बात है कि जो कानून बनाते हैं, वही सबसे बड़े भ्रष्टाचारी हैं। जो इससे मुक्त हैं व असहाय हैं। समाज में यह 'भ्रष्टाचार' किस हद तक जायेगा। कैसे होगा इसका अन्त? कितनी बड़ी विडम्बना है कि जो भ्रष्टाचारी हैं वही इसके विरोधी भी हैं।

❖❖❖

अच्छे लोगों की संगत.......

पर चलने वाला होगा उतना ही उसमें सम्मोहन होगा। एक बड़े सूफी संत विद्वान रब्बानी ने लिखा है कि जो सुन्नत पर चलने वाला होगा वह उतना बड़ा आलिम होगा। यदि उसका सम्बन्ध वहां से होगा तो ज्ञान की सरिता बहने लगेगी, वह ज्ञान के सर्वोच्च स्थान पर विराजमान हो जाएगा और उसके प्रति लोगों में सम्मोहन बढ़ता चला जाएगा।

❖❖❖

भली बातें........................

कभी कोई बुराई न की हो।

ये कह कर वह कुछ देर रुके रहे। हज़रत अली रज़ि0 ने देखा कि एक–एक करके लोग वहाँ से जाने लगे। यहाँ तक कि अदालत में सन्नाटा पसर गया। कोई शेष न रहा। इसीलिए पवित्र क़ुर्आन में कहा गया है कि "तबाही है उस व्यक्ति के लिए जो दूसरे के ऐब निकालता और उन पर ताने कसता है" (सूरः हुमज़ह–1)

अतः हमें चाहिये कि दूसरों पर कीचड़ उछालने से पहले अपने गिरेबान में झाँकें। जब हम किसी पर एक उँगली उठाते हैं तो याद रखें कि तीन उँगलियाँ हमारी ओर ही उठती हैं।

❑❑

अपने भाई से अच्छा ....

ने ईमान लाने को फरमाया? क्या आप हदीसे जिबरील की तालीम से अलग ईमान व इस्लाम और एहसान की तारीफ करते हैं? अगर जवाब इत्मिनान बख्श मिले और हुजूर सल्ल0 से पूरी अक़ीदत का जवाब मिले तो अपने भाई से अच्छा गुमान रखो और उन की बात मान कर उनके साथ दीन का काम करें, उम्मत में जो बेदीनी फैली है उसको दूर करने की कोशिश करें और कोशिश करें कि बहकाने वाले भी हमारे साथ हों। कोशिश करना तो हमारा और आपका काम है हिदायत तो अल्लाह के इख़्तियार में है।

❖❖❖

क्षमा

या रब मुझ से पाप हुए
हो न सके कुछ काम भले
अपनी दया से क्षमा तू दे
पापों की न सज़ा मिले
पश्चातापी मांगे क्षमा
अल्लाह करता ख़ूब क्षमा
प्रिय है उसको करना क्षमा
कर देगा वह मुझको क्षमा

आम

—इदारा

अल्लाह की नेमतों में से आम भी बड़ी अजीब नेमत है। यह भारत और पाकिस्तान का मशहूर फल है। ये कई दूसरे देशों में भी पाया जाता है। यह तुख्मी (बीजू) और कलमी दो प्रकार का होता है। कच्चे आम में जब तक गुठली नहीं पैदा होती उसको कैरी या अमिया कहते हैं। कच्चा आम आमतौर से खट्टा होता है कुछ आम कच्चे मे भी खट्टे नहीं होते। पक्का आम आमतौर से मीठा होता है कुछ तुख्मी आम पकने पर भी खट्टे रहते हैं। पक्के मीठे आम खाने में बड़े मजेदार (स्वादिष्ट) होते हैं। कुछ आम खट्टे मीठे भी होते हैं। पके हुए तुख्मी आम का रस चूसा जाता है और कलमी आम काट कर खाया जाता है। कलमी आम तुख्मी के मुकाबले में देर से हज़्म होता है। पक्का मीठा आम चाहे तुख्मी हो या कलमी बदन को ताकत देता है और उसको परवरिश (पोषण) करता है। और क़ब्ज़ को दूर करता है इसके बराबर इस्तेमाल से बदन ताकतवर और मोटा हो जाता है।

नई खोज से पता चला है कि इसमें विटामिन सी अच्छा खासा पाया जाता है तथा विटामिन ए भी पाया जाता है। इन गिजाई जौहरों की वजह से आम बदन की परवरिश खासकर बच्चों की बढ़ोतरी के लिये बहुत ही लाभदायक फल है।

आम को नहार मुँह (सुब्ह कुछ खाने से पहले) खाना मुनासिब नहीं, खाना खाने के पश्चात या तीसरे पहर खाएं। आम खाने के बाद दूध पी लेने से इसके लाभ बढ़ जाते हैं और आम आसानी से हज़्म हो जाता है। अगर आम खाने के पश्चात थोड़ी जामुनें खा ली जाएं तो आम जल्द हज्म हो जाता है। कच्चा आम लू से बचाता है। कच्चा आम आग में भून लें फिर उसका गूदा पानी में धो लें फिर खाण्ड या मिस्री में पीस कर पिलाएं अगर हो सके तो इसमें थोड़ा सा अर्के केवड़ा भी मिलाएं तो ज़ियादा लाभदायक हो जाएगा। इसको नमकीन में भी इस्तेमाल किया जाता है यानी खाण्ड के बजाए नमक और भुना जीरा तथा हल्की काली मिर्च डाल कर भी पी सकते हैं।

आम की गुठली के अन्दर का मग्ज़ (मेंग) क़ब्ज़ करती है, खास कर पुरानी गुठली की मेंग (मग्ज़) जियादा काबिज़ होती है, इसको बारीक पीस कर और छान कर तीन–तीन ग्राम ताजा पानी के साथ खाने से दस्त रुक जाते हैं। इसके अलावा अगर औरतों में माहवारी जियादा जारी हो या खूनी बवासीर की जियादती हो तो इसके सेवन से ख़ून रुक जाता है। शूगर के रोग में पेशाब की जियादती भी इसके इस्तेमाल से कम हो जाती है।

आम के पेड़ की छाल जो ऊपर की सूखी छाल अलग कर के ली गई हो वो भी काबिज़ है, जो दस्त को रोकती है और ख़ून को बन्द करती है। माहवारी ख़ून की जियादती को और ख़ूनी बवासीर में और लीकोरिया में दस्त और पेचिश में इन सब हालतों में आम की छाल पानी में उबाल कर ठण्डा करके खिलाने से फाइदा होता है। ❑❑

आदर्श शासक

–नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

महान सम्राट हज़रत उमर रज़ि0 ने एक व्यक्ति को बुला भेजा, जिनका नाम हज़रत हबीब था। वह आया तो पूछा कि क्या तुम सईद बिन आमिर रज़ि0 को जानते हो? उत्तर मिला जी हाँ! अच्छी तरह से जानता हूँ। पूछा क्या उनके घर मेहमान बन कर रह सकते हो? जवाब मिला जी हाँ! इसमें कौन सी बड़ी बात है?।

हज़रत उमर रज़ि0 ने कहा कि ये एक हज़ार दिरहम की थैली लो और सईद बिन आमिर रज़ि0 के घर मेहमान बन कर जा रहो, और देखो कि उनकी आर्थिक स्थिति किस प्रकार की है? यदि उनकी आर्थिक स्थिति दयनीय हो तो ये दिरहम मेरी तरफ से दे देना।

हज़रत सईद बिन आमिर रज़ि0 हमस के गवर्नर थे। हज़रत उमर रज़ि0 ने एक बार हमस का दौरा किया। वहां के गर्वनर और जनता से भेंट की। वापसी से पूर्व लोगों को बुलाया और उनसे कहा कि मुझे अपने राज्य के ऐसे लोगों का नाम लिखवाओ जो बैतुलमाल (सरकारी ख़जाने) से सहायता के पात्र हैं।

सूची तैयार होने लगी तो पहला नाम लिखवाया गया सईद बिन आमिर! हज़रत उमर रज़ि0 ने पूछा, उनका नाम क्यों? उन्हें तो वेतन मिलता है। लोगों ने कहा सरकार! वह अपने पास वेतन रखते ही नहीं, कुछ दिरहम निकाल कर शेष अल्लाह के रास्ते में बाँट देते हैं। ये स्थिति जान कर हज़रत उमर रज़ि0 ने हज़रत हबीब को एक हज़ार दिरहम की थैली थमाई।

हबीब जब उनके अतिथि बन कर पहुँचे और भोजन के समय दस्तरख़्वान देखा तो उस पर सूखी रोटी और जैतून के तेल के अतिरिक्त कुछ न था। स्थिति देख कर हबीब ने थैली पेश की।

थैली देख कर अनायास हज़रत सईद रज़ि0 के मुँह से इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन निकल पड़ा। उनकी पत्नी ये शब्द सुनकर बोल पड़ीं, खुदाया ख़ैर! क्या माजरा है?।

हज़रत सईद रज़ि0 ने कहा एक दुर्घटना हो गई है।

पत्नी ने पूछा क्या ख़तरनाक हादसा?। सईद रज़ि0 ने उत्तर दिया हाँ! क़यामत टूट पड़ी है। पत्नी ने व्याकुल होकर कहा, साफ–साफ तो बताइये।

पति ने उत्तर दिया कि घर में धन आया है, सम्राट हज़रत उमर रज़ि0 ने एक हज़ार दिरहम की थैली भेजवाई है। पत्नी ने कहा हाँ, प्रलय जैसी स्थिति तो है लेकिन घबराने की कोई बात नहीं, एक कोने में डाल दीजिए, सवेरे मुजाहिदों का जो दस्ता इधर से गुज़रेगा उसे सौंप देंगे।

आमतौर पर बड़े–बड़े ओहदेदारों की बीवियाँ लालची होती हैं, लेकिन जिसके वजूद में इस्लाम रच–बस जाए उनके सामने बड़ी–बड़ी लाल–पीली नोटें रद्दी कागज़ से ज़्यादा अहमियत नहीं रखतीं।

इस्लाम के शासक वर्गों में से एक और शासक की महानता देखते जाइये। जिसके बारे में पश्चिमी मीडिया ने बहुत ग़लत–सलत लिखा है। यदि वह उसकी दिनचर्या का निष्पक्षतापूर्वक अध्ययन करें तो वास्तविकता कुछ और ही हो।

ख़ैर! उसके दौर में एक माँ दुख से निढ़ाल हुई जा रही थी। एक–ए...

शेष पृष्ठ.................38 पर

(देवनागरी लिपि में उर्दू)

मुसीबत में बशर के जौहरे मरदाना खुलते हैं

—मौ0 सै0 मुहम्मद वाजेह रशीद हसनी नदवी

जो लोग तारीख से सही नताइज अख़्ज़ करने से कासिर हैं और अपने गिर्द व पेश के हालात से सबक हासिल करने की उनमें सलाहियत नहीं है और न वह दूसरों को देख कर नसीहत हासिल करते हैं उन्हें यह मालूम नहीं है कि इस्लाम की राह में बोये हुए काँटे गुल व गुलज़ार बन जाते हैं। तपती रेत और खारज़ारों में नश्व व नुमा पाने वाले ईमान व अकीदत को आलम व शदाएद से मज़ीद ताकत व तवानाई हासिल होती है। और इस आंच में जलने और पिघलने वाले को दवाम व बक़ा नसीब होता है, मशक्कतों और कुर्बानियों से इस्लाम ताबां व दरख़्शां होता है और इस की बुनियादें मज़बूत व मुस्तहकम होती हैं। हक़ की खातिर बहाए गये खून के हर कतरे से इस्लामी बेदारी के इम्कानात रौशन होते हैं और मंजिल मज़ीद करीब हो जाती है।

इस्लाम की बुनियाद जिन खास हालात में पड़ी और उसने इब्तिदाई मंज़िलें तय कीं और इस की दावत के अव्वलीन हामिलीन पर जो जुल्म के पहाड़ तोड़े गये वह हालात हमारे इस दावे का सुबूत हैं। तारीख के औराक़ शाहिद हैं कि जब भी मुसीबतों का सिलसिला दराज़ हुआ दाइयाने हक़ और राहे खुदा के मुसाफिरों की राह में काँटे बोये गये और जब मुसलमानों की किसी जमाअत का तौक़ व सलासिल से इस्तिक़बाल किया गया तो इस्लाम का दायरा वसी हुआ। इसकी बुनियादें मुस्तहकम हुईं और लोग जूक़ दर जूक़ हल्क़ा बगोश इस्लाम हुए, बकौले शाएर

मुसीबत में बशर के जौहरे मरदाना खुलते हैं
मुबारक बुज़दिलों को गरदिशे दौरा से डर जाना

इस्लाम की तारीख का यह अजीब व गरीब बाब है कि शजरे इस्लाम लक़ व दक सहरा में बर्ग व बार लाया और बे आब व गयाह सरज़मी में फला फूला। इस्लाम की तवील तारीख़ के मुताले से यह बात आशकारा होती है कि इस्लाम किसी भी वक्त किसी भी इलाके में सल्तनतों और हुकूमतों की हिमायत व पुश्त पनाही का मरहूने मिन्नत नही रहा है जैसा कि दीगर मजाहिब में यह बात खुसूसियत से पाई जाती है। मसलन ईसाईयत यहूदीयत और दीगर मजाहिब हुकूमतों ही के साये में पले बढ़े, ताकत व कुव्वत, प्रोपेगण्डा और माद्दी वसाइल और दूसरे के इस्तेहसाल के जरिये इन की नश्व व नुमा हुई, जैसे ही इन ताकतों या वसाइल का जवाल हुआ तो उनकी दावत का भी ज़वाल हो गया।

हकीकत पसन्दी, इख्लास और गैर जानिबदारी के साथ तारीखे इस्लाम का मुताला करने वाले के सामने यह हकीकत रोजे रौशन की तरह अयां हो जाती है कि इस्लाम निहायत ही नासाज़गार और हिम्मत शिकन हालात में फला फूला इस लिये अगर किसी मज़हब को यह दावा हो सकता कि वह किसी ताकत व कुव्वत की हिमायत और किसी सलतनत व हुकूमत की पुश्त पनाही के बिना बामे उरूज पर पहुँचा तो वह सिर्फ इस्लाम ही है।

शायद इसी वजह से दुश्मनाने इस्लाम दीगर मजाहिब को इस्लाम की सफ में ला खड़ा करने के लिए खून पसीना एक कर रहे हैं। उन्होंने इस्लामी तारीख में जुल्म

व बरबरियत और खून आशामियों की झूठी दास्ताने शामिल कीं। और इस्लाम ने अपने दिफ़ा में जो जद्दोजेहद की, जो मज़लूम की जद्दोजेहद से जायद न थी उनको जारहियत से ताबीर किया और इस दिफाई जद्दोजेहद को बहाना बना कर इसमें रंग आमेजी करके यह साबित करने की कोशिश की कि इस्लाम एक खूनी मजहब है जो अखलाक़ व किरदार से नहीं बल्कि तलवार व खंजर से फैला और इस पहलू को नज़र अन्दाज कर दिया कि इन के आलाम व शदाएद और खून आशामियों का निशाना हमेशा दाइयाने हक और उलमा का ही गिरोह रहा, इसका सिलसिला जारी है, इस वक्त भी हर मुल्क उलमा और दाइयाने हक शदाइद और क़ैद व बन्द में मुब्तला हैं।

इस्लाम की मसीहाई और कीमिया असरी की अहदे अखीर में एक मिसाल मिस्र से दी जा सकती है, हुक्कामे मिस्र साबिक़ सद्र जमाल अब्दुल्नासिर, अनवर सादात और फिर हस्नी मुबारक ने इसी तारीखी मुग़ालते की बनियाद पर दिल दोज़ फिरऔनी डरामा स्टेज किया और ताक़त व इक्तिदार के बल बूते पर इस्लाम के बहाव को रोकने की तमाम कोशिश की लेकिन इस्लाम को एक नई जिन्दगी मिली, एक नई शाहराह का सुराग़ मिला और उसकी सदा से फ़ज़ा मामूर हुई और हक की आवाज़ को दबाने की हर कोशिश के बावजूद वहाँ इस्लाम की आवाज में सबसे ज़्यादा ताक़त और तासीर है। यही हाल तुर्की, शाम, अलजज़ाइर और कुछ दूसरे मुमालिक का है और अफ़गानिस्तान, इसकी सबसे ज़्यादा नुमायां मिसाल है जहाँ रूस जैसे आलमी ताक़त को शिकस्त का सामना हुआ और अब मौजूदा सुपर पावर को शिकस्त का सामना है।

हक़ की जद्दोजेहद के मिजाज को देख कर हम यह यकीन करते हैं और तजरिबात भी इस के शाहिद हैं कि अन क़रीब हक़ की आवाज़ दुनिया के हर कोने में बुलन्द होगी। मुद्दत ख्वाह कितनी ही दराज़ हो लेकिन हक बुलन्द होकर रहेगा और ताक़त बन कर उभरेगा। और इसके अन्दर जुल्म से मुकाबले का पूरा जज़्बा होगा और हालात से टक्कर लेने का दम खम होगा, मजलूम हमेशा मज़लूम नही रह सकता, यह तारीख़ का फैसला है और जो लोग इसको तस्लीम नहीं करते वह एक तारीखी हकीकत को नज़र अन्दाज़ करते हैं।

इस्लाम की नशअते सानिया की उम्मीद में इस बात से मजीद तकवीयत पहुँचती है कि इसमें नये खौफ का बराबर इज़ाफ़ा हो रहा है। और इसकी कुव्वत रोकने के लिये जो इल्मी, सियासी इक्तिसादी और फौजी वसाइल इस्तेमाल किये जा रहे हैं इनसे इसकी दावत के हामिलीन के अज़्म व हौसले में इज़ाफ़ा हो रहा है और गुजिश्ता सदियों में इस की तारीख के खिलाफ़ जो बुहतान तराशी की मुहिम चलाई गई उसके बादल छट रहे हैं और हकीकत सामने आ रही है। यूरोपियन मुल्कों में दानिश्वरों और फनकारों के कबूले इस्लाम के वाकियात इसके शाहिद है।

दावत के काम से दिल चस्पी रखने वाले अगर मजीद इल्म व बुर्द बारी कूव्वते बर्दाश्त, अज्म व हौसिला, ईमान व यक़ीन, हुस्ने नीयत और ज़माने के मिज़ाज़ और नये हालात व तकाज़ों का भरपूर ख़्याल रखते हुए अमले पैहम से काम लें तो इस्लाम के लिये इन्सानियत की रहनुमाई के इम्कानात और रौशन हो जाएंगे।

❖❖❖

होनहार बिरवन के चिकने-चिकने पात?

–डॉ0 हैदर अली खाँ

मशहूर कौल है कि "होनहार बिरवन के चिकने–चिकने पात"। अर्थात सफलता का लक्षण जन्म के समय ही दिखायी दे देता है। किन्तु यह कथन पूर्ण सत्य नहीं है वरन् विवादास्पद् भी है। कितने ही जन्म जात एवं कुशाग्रबुद्धि वाले आगे चलकर भटक जाते हैं। उनमें से प्रायः परिश्रमी भी नहीं होते वरन् आलस्य का शिकार हो जाते हैं। दूसरी तरफ कम तेजतर्रार लोग सतत् प्रयास द्वारा उच्च शिखर तक पहुँच जाते हैं। आई0ए0एस0 के सफल प्रत्याशियों में एक अध्ययन में पाया गया था कि उनमें से एक तिहाई तृतीय श्रेणी के डिग्रीधारक थे। वास्तव में यह मानना ज्यादा सही होगा कि "जब आँख खुले तभी सवेरा"। प्रायः लोग बडे होकर चेत जाते हैं और अपनी मंज़िल को पाने के लिए दिल व जान से जुट जाते हैं और एक दिन उन्हें सफलता मिल ही जाती है।

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर और काली दास प्रारम्भ में निरा मूढ़ थे लेकिन प्रयास द्वारा खूब यश कमाया। मशहूर क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर हाई स्कूल में फेल हो गए थे किन्तु अपनी लगन से आज खेल की दुनिया के बादशाह हैं। वास्तव में अपनी कमियों से निराश होने के बजाए लगन से प्रयासरत हो जाना चाहिए। संसार में ऐसे अनेक उदाहरण हैं जिनसे प्रेरणा ली जा सकती है।

कहते हैं कि पूत के पांव पालने में ही दिख जाते है, लेकिन ऐसे भी बहुत से लोग हुए हैं जिनके पांव पालने में नहीं दिखे और जीवन के शुरु में मंदबूद्धि या किसी तरह की अन्य कमी से ग्रस्त रहने के बावजूद वे दुनिया की जानी–मानी हस्ती बन गए।

ऐसे लोगों में महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन का नाम सबसे ऊपर है जिनके जन्मदिन के मौके पर 14 मार्च को जीनियस डे मनाया जाता है। इस दिन सिर्फ आइंस्टीन ही नहीं, बल्कि विभिन्न क्षेत्र में अतुलनीय योगदान देने वाली अन्य हस्तियों को भी याद किया जाता है। मनोविज्ञान के प्रोफेसर एस0पी0 सिंह का कहना है कि किसी के होनहार होने या न होने के बारे में बचपन में ही पता चल जाता है, लेकिन यह तथ्य और धारणा शत–प्रतिशत सही नहीं है। कई बार ऐसा भी होता है जब बचपन में फिसड्डी रहा कोई व्यक्ति आगे चलकर जानी–मानी शख्सियत बन जाए।

आइंस्टीन डिस्लेक्सिया से पीड़ित थे और तीन साल की उम्र तक वह कुछ बोल भी नहीं पाते थे। तेरह साल की उम्र तक वह अपने जूतों के फीते बांधना भी नहीं जानते थे। आइंस्टीन शुरु में न तो गुणा–भाग कर पाते थे और न ही शब्दों को सही तरह से लिख पाते थे। उनके शिक्षक हमेशा उनके बारे में नकारात्मक टिप्पणी करते रहते थे। चौदह मार्च 1879 को जन्में आइंस्टीन को विज्ञान में अद्भुत योगदान, खासकर लॉ ऑफ फोटोइलेक्ट्रिक इफेक्ट की खोज के लिए 1921 में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। मनोवैज्ञानिक आर0के0 गौतम के अनुसार, लॉर्ड बिरोन का नाम भी ऐसे लोगों की सूची में शुमार किया जा सकता है। वह बाइपोलर डिसऑर्डर के विकार

शेष पृष्ठ .... 36 पर

इन्सान और अल्लाह की पहचान

—बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

कुर्आन मजीद में जगह—जगह पर अल्लाह तआला की कुदरत और हिकमत का बयान मिलता है। तमाम इन्सानों को दावत दी गयी है कि वो ज़मीन व आसमान में अल्लाह की बिखरी हुई निशानियों पर ग़ौर करें और उससे अपने अस्ली मालिक तक पहुंचने की कोशिश करें। सूरह बक़रा की एक आयत में जहाँ तमाम इन्सानों को एक अल्लाह की बन्दगी का हुक्म दिया गया है और ये बताया गया है कि तमाम इन्सानों का ख़ालिक़ केवल वही अल्लाह है। वहीं आगे उसकी कुदरत के नमूने बयान किये गये कि इन्सान सोचे और ग़ौर करे कि जब इतनी बड़ी—बड़ी चीज़ों का पैदा करने वाला सिर्फ़ वही है तो कौन उसके अतिरिक्त इबादत के लायक़ हो सकता है, इरशाद होता है : (अनुवाद : जिसने ज़मीन तुम्हारे लिये बिछौना और आसमान साया बनाया और ऊपर से तुम्हारे लिये पानी उतारा तो अल्लाह के बराबर किसी को मत ठहराओ जब कि तुम जानते हो)।

ये ज़मीन अल्लाह की कुदरत के बड़े नमूनों में से है। इसी पर इन्सान रहता है, मकानों को बनाता है, खेती—बाड़ी करता है, मगर कितने लोग हैं जो अल्लाह की इस अज़ीम नेमत के बारे में सोचते हैं? अल्लाह ने इसमें ज़िन्दगी का सामान रखा, तरह—तरह के मौसम बनाए, सूरज को पैदा किया जो उसको ज़रूरत की गर्मी पहुँचाता है, चाँद अपनी चाँदनी बिखेरता है, इससे पैदावार में बढ़ोत्तरी होती है और तरह—तरह के फ़ायदे हैं। सितारे बनाए जिनसे आदमी दिशाओं को निश्चित करता है, बड़े—बड़े पहाड़ पैदा किये और उनको ज़लज़ले से बचाव का ज़रिया बनाया, नदियां और नहरें जारी कीं, ज़मीन के नीचे मीठे पानी का इतना बड़ा भण्डार रख दिया कि आदमी निकालता रहे और ख़त्म न हो, क्या इन्सान सोचता है कि ये सारी चीज़ें कहां से आ गयीं, केवल अगर बारिश बन्द हो जाए तो इन्सान की ज़िन्दगी दुश्वार हो जाए। ये लहलहाती हुई ज़मीन तपते हुए रेगिस्तान में बदल जाए।

क़िस्सा मशहूर है कि इमाम अबू हनीफ़ा रह० के ज़माने में किसी मुलहिद ने जो अल्लाह का मुनकिर था और दुनिया की तमाम चीज़ों को इत्तेफ़ाक़ करार देता था, ये कहा कि अगर मेरे कुछ सवालों का जवाब कोई दे दे तो मैं अल्लाह को मान लूंगा, इमाम साहब ने उसका चैलेंज कुबूल कर लिया, और उसके लिये एक जगह और वक़्त तय कर दिया गया। इमाम साहब रह० ने पहुंचने में काफ़ी देर की कि वो देखते ही गुस्सा हो गया, कहने लगा कि जब आप वक़्त पर आये नहीं तो आप जवाब क्या देंगे? इस पर इमाम साहब रह० ने फ़रमाया कि पहले आप मेरा उज़्र सुन लें, फिर आपको सब कुछ कहने का हक़ है। हुआ ये कि मेरे रास्ते में दरिया पड़ता है, आज इत्तेफाक़ से कोई कश्ती नहीं थी तो मैं इन्तिज़ार में देर तक खड़ा रहा, कश्ती तो फिर भी नहीं मिल सकी, अल्बत्ता मैंने देखा कि एक पेड़ अचानक फटा और उसमें से तख़्ते निकले और उसमें से अपने आप कश्ती बन कर तैयार हो गयी और मैं इस पर सवार होकर नदी पार हो गया। वो कहने लगा कि आप कैसी बेवक़ूफ़ी की बात कहते हैं, कहीं ये सब खुद ब खुद होता है? इमाम

साहब रह0 ने कहा कि ये आपके बुनियादी सवाल का खुद ही जवाब हो गया। पूरी कायनात का इतना बड़ा निज़ाम क्या खुद ही वजूद में आ गया, ज़रा भी अगर कोई अक़्ल रखता होगा तो यही कहेगा कि इसका कोई पैदा करने वाला है। इन्सान कारण तलाश करता है और एक के पीछे एक कारण ढूंढता है, लेकिन एक हद तक जाकर उसकी अक़्ल काम करना बन्द कर देती है और उसको कहना पड़ता है कि इसके पीछे कोई ज़बरदस्त ताक़त काम कर रही है ये कौन सी ज़बरदस्त ताक़त है और किस की है जो अक़्ल और अनुभव से परे काम कर रही है। बहुत से इन्सानों ने इसके फ़र्ज़ी नाम रख लिये लेकिन खुद इस कुदरत रखने वाले ने अपनी पहचान के लिए अपने ख़ास बन्दों का चुना और उन पर वही भेजी ताकि इसके ज़रिये से इन्सान अपने रब को पहचान सके और उसकी इबादत कर सके।

(अनुवादः और अल्लाह के लिये अच्छे–अच्छे नाम हैं, तो उन्हीं नामों से उसको पुकारो और उन लोगों को छोड दो जो उसके नामों में ग़लत रविश अपनाते हैं)

अल्लाह तआला ने इन्सान को अक़्ल दी है कि वो इसका सही इस्तेमाल करे अपने ख़ालिक़ व मालिक को पहचानने के लिये इसका इस्तेमाल करे लेकिन अल्लाह ने इसकी भी हदें रखी हैं, उसने अपने नबियों को इसीलिये भेजा है, ताकि वो इन हक़ीक़तों तक भी इन्सान को पहुंचा सकें जहां तक उसकी अक़्ल काम नहीं करती। इसलिये कि अक़्ल भावनाओं को बरत कर ही कोई रास्ता निश्चित करती है। और महसूस चीज़ों को जोड़ कर अनुभवों से महसूस तक पहुंचने की कोशिश करती है और उसमें ग़लतियां करती है, फिर अनुभवों से ही निश्चित रूप का वजूद होता है, लेकिन जो चीज़ें बिल्कुल ग़ैर महसूस हैं, और बिल्कुल छिपी हैं, जिनको शरीअत की इस्तेलाह में "ग़ैब" कहा जाता है, उनका इल्म सिर्फ़ नबियों से होता है। और यहां इन्सान के लिये ये हक़ीक़त समझना ज़रूरी है कि बहुत सी चीज़ें उसकी हद से आगे की हैं।

ऊपर की आयतों में एक और हक़ीकत बयान की गयी है जो इन्सान को सही रुख़ देती है। और उस एक पैदा करने वाले की ताक़त व कुदरत की इन्तेहा बयान करती है। इरशाद होता है (अनुवादः पस तुम अल्लाह का बराबर मत ठहराओ जबकि तुम जानते हो)।

एक आम ज़हन ये सोचता है कि जब निज़ाम बहुत बड़ा हो तो काम करने वाले को मददगार की ज़रूरत पड़ती है जो अगरचे सब के सब उसके मातहत होते हैं लेकिन उसके बग़ैर काम नामुमकिन होता है। यहां पर अक्सर लोग धोखे में पड़ते हैं, अल्लाह के बारे में भी उनका यही ज़हन काम करता है। और वो अल्लाह के साथ भी बहुत से शरीक और मददगार तय कर लेते हैं, और ये सोच लेते हैं कि अल्लाह की हैसियत भी एक बादशाह की है और उसने भी कामों का इख़्तियार दूसरों को दे दिया है। इसके नतीजे में अल्लाह के अलावा दूसरों की परस्तिश होने लगती है। फिर जब इन्सान ये समझता है कि हमारा ये काम फ़लां से होगा तो वो उसको मनाने लग जाता है। लेकिन वो यह नहीं सोचता है कि ये एक बड़ी कमज़ोरी का नतीजा भी है और उसका पेशख़ेमा भी। और दुनिया में ये चीज़ बार–बार तजुर्बे में आती है कि बादशाह के न जानते हुए भी बहुत से काम उसके वज़ीर और मातहत अपनी मर्ज़ी से कर जाते हैं, वो अल्लाह जो इतनी बड़ी ताक़त रखता है जो इन्सान सोच भी नहीं सकता उसके अन्दर अगर

शेष पृष्ठ ....33 पर

इस्लामी मीडिया की आवश्यकता एवं महत्व

—हज़रत मौलाना सैय्यद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी

वर्तमान समय में मीडिया को वास्तविक सत्ता प्राप्त है। इसका महत्व कई बार दिफ़ाई और तक़लीदी व्यवस्था से बढ़ कर हो जाता है। कई देश मीडिया पर सबसे ज़्यादा ज़ोर देते हैं। पश्चिमी देश इस पर अपने बजट का बड़ा हिस्सा ख़र्च करते हैं। कम्युनिस्ट देशों ने मीडिया को पूरी तरह से अपना लिया है। यही कारण है कि वहां की पत्रकारिता अपने सभी रूपों के साथ शासकों की सोच का आइना होती है। इसकी भरपाई और इसमें असर पैदा करने के लिए ये देश अख़लाक़ को बिगाड़ने वाले विषय, फ़िल्मी विषयों, और तफ़रीह के विषयों के प्रोग्रामों में अपने विचारों को सम्मिलित कर देते हैं।

जहां तक गैर पूंजीवादी पश्चिमी पत्रकारिता का सम्बन्ध है तो वो पूरी तरह से आज़ाद है। न उस पर सोच की पाबन्दियां हैं न किसी फ़लसफ़े की हद निश्चित की गयी है। इसके मद्देनज़र केवल दौलत की प्राप्ति, ख्याति है। वो उन सभी चीज़ों को छापने में बड़ी तेज़ी दिखाते हैं जो दिलों को मोह लेने, दिल व दिमाग़ को बदल देने की ज़रा सी भी योग्यता रखती हो। यही कारण है कि वर्तमान पत्रकारिता विचारों की गन्दगी, बेहयाई और झूठ की छपाई का एक ज़रिया बन कर रह गयी है। दुनिया के बड़े अख़बार, अन्तर्राष्ट्रीय न्यूज़ एजेंसियां अख़बारों को चिन्तनीय ख़बरें पहुंचाती हैं। वो ख़बरों के चुनाव और उनको लिखने में अपनी सोच को शामिल कर देती हैं। कई बड़े अख़बारों के अपने प्रतिनिधि होते हैं जो विभिन्न इलाक़ों से रिपोर्ट भेजते हैं ये अख़बार के मालिकों की ज़हनसाज़ी करने की कोशिश करते हैं। इनमें से कई एजेंसियां सहयूनी हैं। अन्तर्राष्ट्रीय इंटेलिजेंस के मातहत हैं जो इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ बाल की खाल उधेड़ती हैं। इसका परिणाम है कि सभी अख़बार इस्लामी दुनिया के हालात ग़लत अन्दाज़ में पेश करते हैं।

मीडिया की दूसरी शक्ल रेडियो, टेलीविज़न की व्यवस्था है जो पत्रकारिता से ज़्यादा कारगर है और जिसके असर का क्षेत्र और बड़ा है। इसका कारण ये है कि पत्रकारिता का प्रभाव क्षेत्र पढ़े–लिखे या उनसे सम्बन्धित लोगों तक सीमित है। लेकिन उसके विपरीत रेडियो की व्यवस्था का प्रभाव क्षेत्र उससे कहीं अधिक बड़ा है क्योंकि इससे बच्चे भी दिलचस्पी लेते हैं और मर्द–औरत, छोटे–बड़े, पढ़े–लिखे और जाहिल सब ही आनन्दित होते हैं। इसी तरह टेलीविज़न रेडियो से कहीं ज़्यादा असरदार है क्योंकि वो दृश्य के साथ और विश्लेषण के तौर पर प्रस्तुत करता है जिससे ज़िन्दगियों का प्रभावित न होना और ज़हन व दिमाग़ का असर न क़ुबूल करना नामुमकिन है। क्योंकि वो इन्सान को बाहरी माहौल से नहीं बल्कि उस माहौल से जोड़ता है जो हज़ारों मील के फ़ासले पर है।

उन्हीं मीडिया में वीडियो कैसेट, सिनेमा और ड्रामे भी हैं जो पर्दे पर दृश्यों को विभिन्न रूपों में प्रस्तुत करते हैं। जिनसे ज़हन साज़ी, ज़ौक़ आराई, समाज की तश्कील के विभिन्न दृष्टिकोण, ज़िन्दगी के हालात, लोगों के जज़्बात व तास्सुरात से जानकारी

का काम लिया जाता है।

ये नई मीडिया अपने अन्दर बहुत हद तक योग्यता रखती है। और नये समाज को बनाने, नई नस्ल के प्रशिक्षण में इस्लामी समाज को इन साधनों की कहीं अधिक आवश्यकता है। लेकिन इन साधनों पर विभिन्न प्रकार से समाज को बिगाड़ने वाली संस्थाओं का तिलिस्म है। जिससे वो विचारों की क्रांति लाने, नये समाज को ढालने का काम लेते हैं बल्कि वो इनसे इस प्रकार का काम ले रहे हैं, जिस तरह जासूसों से काम लिया जाता है। वो हर घर में प्रवेश कर रहे हैं और हर व्यक्ति उनका प्रभाव स्वीकार करता है। इन सभी संस्थाओं ने अख़लाक़ के अध्याय में मर्दों और औरतों का संतुलन ही नहीं बल्कि अच्छे और बुरे का भेद ख़त्म कर दिया है। यही कारण है कि इनकी ख़बरों में अच्छी बातों की जगह बुरी बातें का तसव्वुर ज़्यादा है। इसी प्रकार इन संस्थाओं ने महिला स्वतन्त्रता के मतलब परस्त विचार को अपना लिया है। जिसके बाद उनकी हैसियत ख़बर देने वाली संस्थाओं के सामने बिना मूल्य के सामान सी हो गयी है।

मीडिया के लिएं इस्लाम की रौशनी में शिक्षा के नये फ़लसफ़े की तश्कील होनी चाहिये और चिन्तकों और योग्य लोगों को और ज्ञानियों की एक जमाअत को इस प्रकार प्रशिक्षण देना चाहिए कि वो इस्लामी शिक्षा से जुड़ सकें और इस्लाम की ज़िन्दगी और इन्सान के बारे में जो विचार है उसका साथ दे सकें। कई शासकों ने इस्लामी पत्रकारिता, और इस्लामी दूरदर्शन संस्थाएं भी स्थापित कीं जो इस्लामी फ़िक्र के आधार पर प्रोग्राम करती थीं और सभी इस्लामी अख़बारों को अख़बारी विषय उपलब्ध कराती थीं लेकिन ज़ाहिर है कि इन संस्थाओं का क्षेत्र बहुत ही छोटा है क्योंकि ये सभी प्रयास व्यक्तिगत स्तर पर हुए हैं।

पत्रकारिता और लासलकी व्यवस्था (जो पूरी तरह से सहयूनी ताक़तों के प्रभाव में है) पश्चिमी देशों में वास्तविकताओं को तोड़ मरोड़ कर पेश करने और इस्लामी दुनिया की पक्षपाती और बेइन्साफ़ी की तस्वीर खींच कर यूरोप और अमेरीका में रहने वाले मुसलमानों और अरबों के ख़िलाफ़ बड़े घिनौने प्रोपेगण्डे करते रहते हैं। ❑❑

इन्सान और अल्लाह ....

इस कमज़ोरी को सोच लिया गया तो फिर वो खुदाई कब रह गयी। यहां इन्सान इसलिये ठोकर खाता है कि वो अपने महसूसात और तजुर्बात पर खुदा को भी क़यास करने लगता है, और ये भी भूल जाता है कि ये कमज़ोरी है जो ख़ुदा की शान के ख़िलाफ़ है, इसलिये आयत शरीफ़ में इससे मना किया गया है और साफ़ कह दिया गया कि किसी को भी उसके बराबर न समझो और बहुत सी आयत में ये बात बता दी गयी है कि उसको किसी मददगार की ज़रूरत नहीं।

सभी इन्सानों को ख़िताब करके इस आयत में उसकी कुदरत व हिकमत पर ग़ौर करने की दावत दी गयी है ताकि एक ज़बरदस्त पैदा करने वाले को सही पहचान हासिल हो और उसकी न ख़त्म होने वाली कुदरत व ताक़त का इक़रार हो, उसी की कुदरत जो दूसरे को शरीक किये हुए बग़ैर हर चीज़ पर क़ादिर है, वही अल्लाह है जो तन्हा तमाम निज़ाम चला रहा है। (अनुवाद: याद रखो उसी का काम है पैदा करना और उसी का काम है निज़ाम चलाना)।

❖❖❖

शिक्षा प्रद घटना

—इदारा

कुछ घटनाएं बड़ी अद्‌भुत, सीखमय तथा शिक्षा प्रद होती हैं उन्हीं में से यह घटना भी है, जिसका उल्लेख करना चाहता हूँ।

वाराणसी से गंगा नदी जिस ओर बहकर गई है उसी ओर लगभग 30 कि0मी0 दूरी पर गंगा ही के तट पर एक गाँव था। उस गाँव में एक ठाकुर का घर था ठाकुर जी धनवान थे माता, पिता, पत्नी तथा एक बेटे के साथ रहते थे, बेटा अभी पाँच–छः वर्ष का था। ठाकुर जी का शुभ नाम राम सिंह था, बेटे का नाम सूर्य सिंह रखा था। राम सिंह का एक बंगला वाराणसी में भी था। कभी–कभी वह कई कई महीने अपनी पत्नी तथा बेटे के साथ वाराणसी के बंगले पर रहते थे। एक समय वह वाराणसी वाले बंगले पर थे कि वहां चेचक की महामारी फैल गई और उनकी पत्नी बुरी तरह चेचक में ग्रस्त हो गई तथा दिन–दिन उसकी दशा गम्भीर होती चली गई यहां तक कि पत्नी का देहान्त हो गया। राम सिंह जी बहुत प्रभावित हुए, बेटा अभी सुरक्षित था, उन्होंने प्लान बनाया कि वह तुरन्त बंगले में ताला डाल कर बेटे को लेकर गांव चले जाएं, परन्तु पत्नी के शव का क्या करें उधर बेटा बुरी तरह से रो रहा था। राम सिंह ने अपने रसोईया पं0 राम दयाल को बुलाया और कहा मैं तुरन्त गांव जाना चाहता हुँ तुम ठकुराइन का कार्य सम्पन्न करो और ये लो, यह सौ रूपये हैं शमशान ले जाकर अग्नि को सौंप दो और सब काम ठीक से करा दो। हम घर में ताला नहीं लगाते हैं, तुम घर पर रहना जो पैसे बचेंगे उनमें से अपना काम चलाना, जब हम आएंगे तो हिसाब समझ लेंगे।

राम दयाल ने कहा साहब का हुक्म सर आँखों पर। राम सिंह ने अपने रसोइया को सौ रूपये दिये और रोते हुए बेटे को लेकर गांव चले गये।

यह बहुत दिनों की बात है उस समय गाँव में 50 पैसे में मज़दूरी थी तथा नगर में अधिक से अधिक दो रूपया, शमशान पर शव जलवाने में अधिक से अधिक 20 रूपये पड़ते थे। राम दयाल ने एक नाई को पाँच रूपयों पर राजी कर लिया और तय किया कि दोनों मिलकर टिक्ठी पर बाँध पर शव शमशान स्थल पर पहुँचा देंगे परन्तु नाई ने सलाह दी कि रात में हम दोनों शव ले चलें और चुपके से नदी में बहा दें। घड़ियाल तथा मछलियां शव को खा जाएंगी, ठाकुर महोदय से कह देना कि जलवा दिया वह क्या जानेगें।

इस प्रकार शमशान स्थल के 20 रूपये तथा कम से कम कफन के पाँच रूपये बच जाएंगे जिसे हम दोनो बांट लेंगे, ठाकुर जी को हिसाब बता देना 10 रूपये कफन के 20 रूपये शव के शमशान स्थल पहुँचाने के 20 रूपये शमशान स्थल के कुल 50 रूपये खर्च हुए इसमें 30 रूपये तुम ले लो और 20 रूपये मुझको दे दो और हां 5 रूपये टिक्ठी का भी बता देना, नाई की सलाह राम दयाल को अच्छी लगी और दोनों ने रात के अंधेरे में पुलिस की आँखों से बच कर शव को गंगा में डाल दिया। मालिक का करना कि शव तेज़ बहाव में बह कर ठाकुर जी के गांव के बराबर किनारे लग गया और एक बैरी की टहनी जो पानी से लग रही

थी उससे शव रुक गया। मालिक की मर्ज़ी शव को न घड़याल ने छुआ न किसी मछली ने, हो सकता है चेचक की दुर्गन्ध से ऐसा हुआ हो या जो भी हो मालिक को तो कुछ और ही दिखाना था।

उधर नाई ने 55 रूपये का बटवारा करके खुश–खुश अपने घर चला गया। वास्तव में शव का देहान्त न हुआ था अपितु ठकुराइन को सक्ता (जीवित रहते सांस रुक जाना) हो गया था, बैरी की टहनी का काँटा शव को लगा और रक्त बहने लगा, सक्ता टूट गया, ठकुराइन ने आँख खोल दी और अपने को पानी में नदी के तट पर पाया किसी प्रकार उठ बैठीं और धीरे धीरे कीचड़, पानी से निकल कर सूखे में आगईं, और बैठे–बैठे एक ओर को चलीं, उनकी समझ में आया कि वह तो अपने गाँव वाले खेत में हैं वह बैठे–बैठे अपने घर की ओर चल दीं पूरा अंग वस्त्र हीन था चेचक के घावों से पीड़ित थी, चरवाहों ने निकट आकर देखा तो चिल्लाए कि भूतनी या परेतनी आ रही है, ठकुराइन जोर से बोल नहीं पा रही थीं और कोई निकट आ कर उनको देख नहीं रहा था, वह बैठे–बैठे अपने घर की ओर सरक रही थीं ठाकुर राम सिंह भी बन्दूक लेकर निकल पड़े उनका बेटा भी, करीब आए तो पत्नी को पहचान लिया, बेटे ने भी अपनी माता को पहचान लिया परन्तु राम सिंह ने बेटे को पकड़ कर गाँव के एक व्यक्ति को देकर कहा कि इसे पकड़े रहो, राम सिंह ने कहा अवश्य यह भूतनी है यह मेरी पत्नी अवश्य है परन्तु भूतनी है। वह मर चुकी और शमशान स्थल पर जल चुकी है, यह भूतनी ही है और बन्दूक से उस पर फ़ायर कर दिया वह अचेत होकर लोट गई।

उधर बच्चा दहाड़ें मार–मार कर रोने लगा, बच्चे का रोना बिलकना लोगों से देखा न जा रहा था, नासमझ बच्चा अपने बाप से कह रहा था कि अब मुझको भी गोली मारो। बाप ने बेटे को किसी तरह चुप करके कहा बेटे रोओ मत मैंने खाली फायर किया था चलो तुम को भूतनी से मिलाये देते हैं, ठकुराइन जो फायर की आवाज के भय से अचेत हो गईं थीं थोड़ी देर पश्चात चेतवान हो गईं, राम सिंह अपने पुत्र के साथ उसके पास गये और उसको एक साड़ी पहना दी। ठकुराइन रो रोकर कह रही थी, मैं भूतनी नहीं हूं मैं आपकी पत्नी हूं। राम सिंह कह रहे थे कि मैंने तो अपनी पत्नी को वाराणसी के शमशान स्थल में जलवा दिया तुम अवश्य भूतनी हो। ठकुराइन ने कहा मुझे कुछ नहीं पता है कि यह सब कैसे हुआ पर मैं आपकी पत्नी हूं, अब बच्चा अपनी माँ के पास बैठा था, परन्तु राम सिंह के हाथ में अब लोडेड बन्दूक थी उसकी अनुमति न थी कि बेटा माँ को या माँ बेटे को छू सके। ठाकुराइन ने कहा ठाकुर जी आप मुझे अपने घर में रहने दें मैं आपके पशुओं की गोबर कन्डी तथा सानी भूसा करूँगी आप का झूठा बचा खा लिया करूँगी और अपने सुपुत्र का देख कर जीऊँगी। उधर बच्चा अब भी मम्मी मम्मी कह कर रो रहा था, अन्ततः राम सिंह ने द्वारे पर एक कुरिया में उसे रखने का निर्णय लिया उसको खाना खिलाया वह कुरिया में रहने लगी। बेटा सूर्य सिंह उसे खाना पानी देता, थोड़े दिनों में उसकी माता के घाव सूखने लगे और पूरे बदन पर खुरन्ड पड गई। लोगों के परामर्श पर राम सिंह ने उसके शरीर पर सरसों का तेल लगवाया, कुछ ही दिनों में सूर्य सिंह की माँ ठीक हो

गईं। परन्तु वह उसको कुरिया ही में रहने की अनुमति थी। डेढ़ मास पश्चात जब खबर आने लगी कि वाराणसी में अब महामारी नहीं है तो एक दिन राम सिंह ने अपने बंगले पर जाने का निर्णय लिया, अब उनको भी कुछ शंका होने लगी थी, वह अपने बंगले गये, राम दयाल ने हाथ जोड़ कर आशीर्वाद दिया कि वह पंडित था, पंडित दूसरों को प्रणाम नहीं करता केवल आशीर्वाद देता है।

राम सिंह ने हिसाब मांगा, राम दयाल ने तुरन्त बताया कफन 10 रूपये, टिक्ठी 5 रूपये, मजदूरी 20 रूपये, शमशान स्थल पर का खर्च 20 रूपये यह, 45 रूपये शेष प्रस्तुत है, घर में सब कुछ था मैं पका कर खा रहा था और कुछ खर्च न हुआ।

राम सिंह ने घोर ध्वनि से डाँटते हुए कहा सच बताओ क्या तुमने ठकुराइन को जलवा दिया था? मैं अभी शमशान स्थल जाकर जाँच करुँगा, इस लिए कि ठकुराइन तो हमारे घर जीवित बैठी हैं। तब राम दयाल ने हाथ जोड़ कर कहा हुजूर क्षमा चाहता हूँ नाई के बहकावे में आ गया और शव को नदी में डाल दिया था। राम सिंह ने कहा जाओ क्षमा किया और शेष रूपये भी, तुम को बख्श दिया अब मेरी समझ में आ गया, ठकुराइन मरी न थीं साँस रुक गई थी यदि तुम जलवा देते तो छुट्टी थी। तुमने शव नदी में डाल दिया शव बहकर हमारे गाँव के निकट किनारे लग गया और किसी प्रकार ठकुराइन को होश आ गया और घिसटते हुए बाहर आईं घिसटते हुए हमारे द्वार तक पहुँच गईं और हर ओर भूतनी-भूतनी का शोर था मैंने उन पर हवाई फायर किया वह अचेत हो गईं। फिर सूर्य सिंह के रोने चिल्लाने पर मैंने उस भूतनी को अपने द्वारे कुरिया में रख लिया यह सब ऐसा भेद है कि मेरा मन मस्तिष्क इसको सहन नहीं कर पा रहे हैं परन्तु इतना तो अब मेरे मन में उतर ही गया है कि ईश्वर है और यह सब ईश्वरीय माया है।

अब मैं तुरन्त घर जाता हूँ और अपनी ठकुराइन से छमा चाहूँगा, राम सिंह आँसू बहाते तुरन्त गाँव चल दिये घर पहुँच कर पत्नी के पैरों पर गिर पड़े, पूरा गाँव घेरे खड़ा था, राम सिंह ने सबके सामने पूरी कहानी दोहराई, सबके मुख में एक ही शब्द था हे भगवान आप धन्य हैं।

ठाकुर राम सिंह पत्नी को घर ले गये। उनके माता पिता इस घटना के प्रभाव से गूंगे से हो गये थे बहुत ही प्रसन्न हुए उनकी आँखों में खुशी के आँसू थे।

कितनी अद्भुत, सीखमय तथा शिक्षा प्रद घटना है। ईश्वर ने किस प्रकार नाई के मन में यह घाट की बात डाली और यह घाट कितना लाभप्रद रहा। नदी के किसी जीव जन्तु ने ठकुराइन को न छुआ, यह ईश्वर (अल्लाह) के आदेश ही से था।

राम सिंह के दिल में किस प्रकार ईश्वर ने यह बात डाली कि वह केवल हवाई फायर करे वरना काम तमाम था।

निः सन्देह ईश्वर (अल्लाह) है और उसके भेदों को कोई पा नहीं सकता वह जिसे चाहता है सत्य मार्ग पर लगा देता है।

❑❑

होनहार बिरवन के ....

से ग्रस्त थे, लेकिन बाद में अपने काव्य के जरिए वह जीनियस कहलाए। विज्ञान जगत को गुरुत्वाकर्षण का सिद्धान्त देने वाले सर न्यूटन की कहानी भी कुछ ऐसी ही है। वह मुश्किल से बोल पाते थे और तुनकमिजाज थे और उनके बहुत कम मित्र थे। उन्हें सामाजिक संबन्ध बनाने और दूसरों को जवाब देने में काफी कठिनाई होती थी।

❑❑

अहले खैर हजरात से अपील

अल्लाह तआला का शुक्र है कि दारुल उलूम नदवतुल उलमा हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी की संरक्षता में अपनी इल्मी व दीनी खिदमात में लगा हुआ है, इल्मे दीन के तालिब इल्मों की अधिकता के कारण रिहाइश (निवास स्थान) की बड़ी समस्या हो गई, जिसकी वजह से पिछले साल तालिब इल्मों के दाखिले सीमित करने पड़े, और नये तालिब इल्मों की एक बड़ी संख्या मायूस होकर वापस हो गई। इस सूरते हाल को देख कर नदवतुल उलमा की प्रबंधन कमेटी ने नये छात्रावास निर्माण का निर्णय लिया। अल्लाह की मदद के भरोसे पर निर्माण कार्य शुरु हो गया है।

इस नये छात्रावास में जो तीन मन्जिला होगा, 60 कमरे और 3 बड़े हाल होंगे, ताकि तालिब इल्मों की रिहाइश (निवास) के साथ दूसरी शिक्षा सम्बन्धित ज़रूरतें पूरी हो सकें।

इस निर्माण कार्य पर 2,35,00,000 (दो करोड़ पैंतीस लाख) रूपये, और एक कमरे पर लगभग चार लाख रूपये के खर्च का अन्दाज़ा है, जो इन्शाअल्लाह अहले खैर के तआवुन (सहयोग) से पूरा होगा, हम उम्मीद करते हैं कि आप इस महत्वपूर्ण कार्य की ओर अवश्यक ध्यान देंगे और नदवतुल उलमा के कार्यकर्ताओं का हाथ बटाएंगे, ताकि दीनी तालिबइल्म संतुष्ट होकर शिक्षा प्राप्त कर सकें, हमें अल्लाह तआला पर भरोसा है कि उसकी मदद से यह अहम काम पूर्ति को पहुँचेगा।

मौ0 मुफ़्ती मु0 ज़हूर नदवी
(नाएब नाज़िम, नदवतुल उलमा)

प्रो0 अतहर हुसैन
(मोतमद माल, नदवतुल उलमा)

मौ0 मु0 वाज़ेह रशीद नदवी
(मोतमद तअलीम, नदवतुल उलमा)

मौ0 सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
(मोहतमीम दारुलउलूम, नदवतुल उलमा)

मौ0 मु0 हमज़ा हसनी नदवी
(नाज़िरे आम, नदवतुल उलमा)

चेक/ड्राफ्ट पर सिर्फ यह लिखें।	और इस पते पर भेजें।
NADWATUL ULAMA **A/C NO. 10863759733** **(State Bank of India Main Branch, Lucknow)**	**NAZIM NADWATUL ULAMA,** **P.O. BOX NO. 93, TAGORE MARG,** **LUCKNOW-226007 (U.P.)**

ध्यान दीजिए

—इदारा

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 एक दिन नबी सल्ल0 के पीछे एक ही सवारी पर थे कि नबी सल्ल0 ने कहा ऐ लड़के! मैं तुम को कुछ शब्द (कलिमात) सिखाता हूँ कि तुम अल्लाह का ख़्याल रखो, अल्लाह तुम्हारी हिफ़ाज़त (सुरक्षा) करेगा। अल्लाह का ध्यान रखो अल्लाह को अपनी ओर कृपाशील पाओगे, जब मांगो तो अल्लाह से मांगो तथा जब सहायता मांगो तो अल्लाह ही से मांगो और जान लो कि अगर सारे लोग एकत्र होकर तुम को कुछ लाभ पहुँचाना चाहें तो कुछ भी लाभ नहीं पहुंचा सकते सिवाये उसके जो अल्लाह ने तुम्हारे लिये लिख रखा है और अगर सारे लोग मिल कर तुम को कुछ हानि पहुँचाना चाहें तो कुछ भी हानि नहीं पहुंचा सकते सिवाये उसके जो अल्लाह ने तुम्हारे लिये लिख रखा है लोगों की तक्दीर लिखने वाले कलम उठा लिए गये अर्थात तक़दीरें लिखी जा चुकीं और जिस दफ्तर में तक्दीरें लिखी गई उनकी सियाही सूख चुकी अर्थात् तक्दीरों का लिखना पूरा हो चुका।

यह एक हदीस का मफहूम है (अर्थ) है। हदीस तिर्मिजी के बाबुल इस्तिक़ामा में अंकित है।

यहाँ कुछ मांगना तथा सहायता मांगना से तात्पर्य दुआऐं मांगना है, दुआ केवल अल्लाह से करना चाहिये कुछ लोग मृतक पुरुषों से दुआ मांगते हैं वह इस हदीस के विपरीत करते हैं। जो लाभ रहित, स्वादहीन महापाप है। रही बात परस्पर एक दूसरे के लेन देन और सहायता की तो वह इस हदीस में मना नहीं है, वह तो कुर्आन मजीद में आदेश "भले कार्यों में एक दूसरे की सहायता करो तथा बुरे कार्यों में एक दूसरे की सहायता न करो"(माइदा:1) के अन्तर्गत वर्जित नहीं है।

❑❑

आदर्श शासक..................

को पकड़ कर फरियाद करती और अपना दुख बताती।

ये सलीबी जंग के दौरान की बात है, जब ईसाईयों ने शाम (सीरिया) के क्षेत्रों पर आक्रमण करके मुसलमानों पर जुल्म व सितम के वह पहाड़ तोड़े कि उसके ज़िक्र भर से तारीख़ थर्रा उठती है। बहर हाल! जब ईसाईयों ने अपनी यहाँ सत्ता स्थापित कर ली और मुसलमानों पर लगातार अत्याचार करते रहे तो अल्लाह ने उनसे छुटकारा दिलाने के लिए सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी को मैदान में उतारा।

उसी मैदान—ए—जंग का ही किस्सा है कि वह महिला जो दहाड़ें मार—मार कर आसमान सर पर उठाये हुए थी, उसका एक बेटा खो गया था, वह उसे बेक़रारी से ढूँढ रही थी। वह किसी ईसाई सैनिक की पत्नी थी। युद्ध के दौरान जो बन्दी मुसलमानों के हाथ लगे उसमें उसका लाडला बेटा भी था। हालाँकि ये कोई अनोखी घटना नही थी। फिरंगी तो प्रतिदिन ही मुसलमानों को उठा ले जाते थे। लेकिन जब खुद पर मुसीबत आन पड़ती है तभी दूसरों को दुख दिखाई देता है।

वह महिला अपने एक—एक फौजी कमाण्डरों के पास जाती और अपनी दुख भरी कहानी सुनाती। उसके फौजी कमान्डर उसे कोई दिलासा नहीं दे पा रहे थे।

जारी...........

निदा-ए- इस्लाम

यह हिन्दी का एक नया मैगजीन है जो 2009 से इस्लाम की आवाज़ फैला रहा है मेरे सामने किताबी साइज़ के 72 पृष्ठ का विशेष अंक है इस अंक में नमाज़ से सम्बन्धित सभी महत्वपूर्ण बातें आ गई हैं। यह 72 पृष्ठ का अंक जनवरी 2011 से जून 2011 तक के लिये है।

-विस्तृत जानकारी के लिये सम्पर्क करें-

मुहम्मद नईमुद्दीन

सिद्दीकी लाइब्रेरी पुलिस लाईन रोड,
गोरा बाजार गाज़ीपुर उ0प्र0

"सच्चा राही" के दसवें वर्ष में प्रवेश पर बधाई!

नदवतुल उलमा, लखनऊ के मजलिसे सहाफत व नशरियात द्वारा प्रकाशित हिन्दी मासिक 'सच्च राही' के दसवें वर्ष में प्रवेश के अवसर पर बधाई देते हुए इसके सफल सोद्देश्य प्रकाशन की कामना करता हूँ।

नदवा हमेशा से वक़्त के नब्ज़ पर हाथ रखने का काम करता रहा है और इसी क्रम में उसने हिन्दी में नियमित मासिक पत्र के प्रकाशन का बेड़ा भी उठाया है। अब वक्त की मांग है कि "सच्चा राही" अब "सच्चा रहबर" भी बनें। देशवासियों को सच्चा रास्ता दिखाने की सख़्त ज़रूरत है। भारत आकंठ भ्रष्टाचार में डूबा हुआ है। साम्प्रदायिकता और घृणा पैदा करने की अनवरत कोशिश हो रही है। इस्लाम, इस्लामी कल्चर, उर्दू और मुसलमानों की संस्थाओं के विरुध अनवरत प्रसार व प्रचार जारी है। ऐसे में "झूठ, सच न बन जाए" के लिए सत्य एवं तथ्य भी परोसने की ज़रूरत है। यह कार्य सच्ची पत्रकारिता को ही अंजाम देना है। आशा है कि "सच्चा राही" इस दिशा में अपना फर्ज़ निभाने का प्रयास करेगा।

उत्तर भारत जिसे हिन्दी क्षेत्र या "काऊ बेल्ट" भी कहते हैं में मुस्लिम हितों के विरुद्ध संघ परिवार अपनी पूरी शक्ति के साथ लगा हुआ है। उसे निष्प्रभावी करने की जरूरत है। इस क्रम में विनम्रतापूर्वक कहना चाहूंगा कि "सच्चा राही" एक तरफ अपने सम्पादक मण्डल को और सशक्त बनाए तथा दूसरी तरफ मूल हिन्दी आलेखों को और अधिक समावेशित करने का प्रयास करे।

डॉ0 हैदर अली खाँ

पूर्व रीडर,, टाउन स्नातकोत्तर महा विद्यालय, बलिया

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

– डॉ० मुईद अशरफ़ नदवी

मुस्लिमों को आरक्षण से धर्मान्तरण बढ़ेगा : विहिप – विश्व हिन्दू परिषद ने पश्चिम बंगाल सरकार की उस घोषणा की आलोचना की है जिसमें मुसलमानों को अन्य पिछड़े वर्गों के तहत नौकरियों में दस प्रतिशत आरक्षण देने की बात कही गई है। विहिप के वरिष्ठ नेता प्रवीण तोगड़िया ने कहा कि इससे धर्मान्तरण को बढ़ावा मिलेगा।

अमेरिका ने किया बुर्के का समर्थन – बुर्के पर पाबन्दी लगाए जाने के बाद खड़े हुए विवाद के बीच अमेरिका ने कहा है कि लोगों को आस्था की अभिव्यक्ति और धार्मिक पोशाक पहनने का पूरा अधिकार है। अमेरिकी विदेश विभाग के प्रवक्ता मार्क टोनर ने कहा कि अमेरिका धार्मिक स्वतंत्रता का समर्थक है, हालांकि उन्होंने बुर्के पर पाबंदी लगाने के लिए फ्रांस की आलोचना नहीं की। उन्होंने फ्रांस को अमेरिका का प्रमुख साझेदार करार देते हुए कहा, मैं चाहूंगा कि इस बारे में लोग फ्रांस से पूरा स्पष्टीकरण मांगे।

दुनिया भर में बैडमिंटन वर्ल्ड फेडरेशन के एक जून से स्कर्ट पहनने के फैसले पर विरोध बढ़ता जा रहा है-

भारतीय बैडमिंटन स्टार सायना को एतराज– भारत की चोटी की खिलाड़ी सायना नेहवाल का कहना है कि बैडमिंटन में न केवल कोर्ट पर लगातार दौड़ना होता है बल्कि इसमें काफी जंपिंग भी होती है। स्कर्ट पहनकर ये सब करना बहुत असहज रहेगा। सायना का कहना है कि सभी खिलाड़ियों को साथ मिलकर इस नियम के खिलाफ लड़ना चाहिए। लेकिन सायना अपने एतराज के बावजूद ये जरूर कहती हैं कि अगर ये बैडमिंटन की बेहतरी के लिए लागू किया जा रहा है तो इसे मान लेंगी। सायना ने बैडमिंटन की दुनिया में काफी नाम कमाया है। वे इस समय बैडमिंटन की दुनिया की बेस्ट–5 खिलाड़ी में शुमार हैं और उन्हें 2012 ओलंपिक में पदक का प्रमुख दावेदार माना जा रहा है।

चीनी खिलाड़ियों ने किया विरोध– चीनी महिला खिलाड़ियों को भी स्कर्ट अनिवार्य करने के नियम पर आपत्ति है। 2008 की ओलंपिक चैम्पियन यु यांग का कहना है कि मैं स्कर्ट पहनना नहीं चाहती, मैं उसकी आदी नहीं हूं, मुझे नहीं मालूम कि जब मैं स्कर्ट पहनूंगी तो किस तरह खेलूंगी।

एक मिनट में लिखा 264 अक्षरों का एसएमएस- गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड्स ने आस्ट्रेलियाई किशोर चिओंग किट को पृथ्वी पर मौजूद सबसे तेज़ एसएमएस टाइप करने वाला शख़्स करार दिया है। चिओंग को 10,000 डॉलर इनाम दिया गया है। उसे न्यूयार्क में अगले वर्ष जनवरी में होने वाले एलजी वर्ल्ड कप में भाग लेने की स्वीकृति भी मिल गई है।

❖❖❖